डायमंड कॉमिक्स डाइजेस्ट-LXVII
डायमण्ड कॉमिक्स
Rs. 12.00
ताऊजी -7

ताऊजी और शैतान घाटी

सम्पादक- गुलशन राय   कथानक- जमीर   चित्रांकन- गनेश

आधी रात का समय था. ताऊ जी अपने बिस्तर पर गहरी नींद सो रहे थे. अचानक उनके सपने में ब्रह्मा जी प्रकट हुए.

उठो ताऊ जी, देवलोक खतरे में है. हमारी सहायता करो और देवलोक को विनाश से बचा लो!

ताऊ जी सपने में ही बड़बड़ाए.

ब्रह्मा जी को मेरा सादर प्रणाम, देवलोक पर ऐसा कौन सा खतरा आ गया है जिससे आप परेशान हो उठे हैं. आपको मुझसे सहायता मांगने आना पड़ा. मैं एक तुच्छ प्राणी भला आपकी क्या सहायता कर पाऊंगा ?
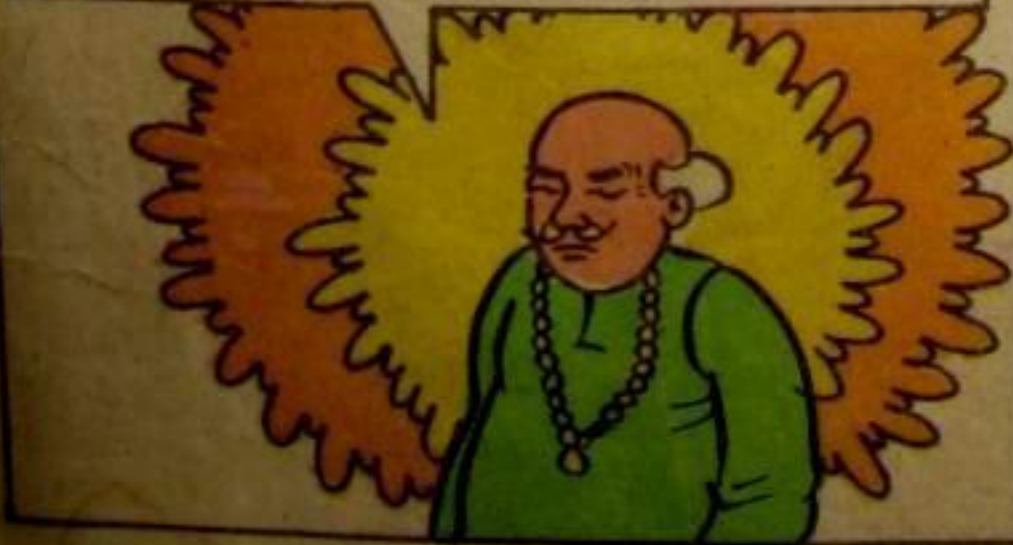
तुम तुच्छ प्राणी नहीं हो ताऊ जी. यह बात भला मुझसे अच्छी तरह और कौन जान सकता है. मानव जाति की भलाई करकर के तुमने देवलोक के देवताओं का दिल जीत लिया है. मुझ सहित अनेक देवताओं ने प्रसन्न होकर तुम्हें अपनी कई शक्तियां प्रदान की हुई हैं. आज उन्हीं शक्तियों के बदले में मैं तुमसे सहायता मांगने आया हूं.

मुझे शर्मिंदा न करें भगवन! आज्ञा दें, मुझे क्या करना है?

सुनो... यहां से दूर पश्चिम में शैतान घाटी है- वहां शैतान का पुजारी औघड़नाथ अमृत प्राप्त करने के लिए जाप कर रहा है. उसे जाप करते हुए छत्तीस दिन हो चुके हैं. अगर उसने चालीस दिन...

...का जाप पूरा कर लिया तो अनर्थ हो जाएगा. देवताओं को मजबूर होकर औघड़नाथ को अमृत देना पड़ेगा. वह अमृत संसार के सारे शैतान पी लेंगे... और अमर हो जाएंगे. फिर हम देवता लोग भी उन्हें नहीं मार पाएंगे. शैतान पृथ्वी ही नहीं देवलोक के कामों में टांग अड़ाना शुरू कर देंगे- जिसका परिणाम होगा संसार का...

...सर्वनाश- संसार को सर्वनाश से बचाना चाहते हो तो शैतानघाटी जाकर औघड़नाथ को जाप पूरा करने से न सिर्फ रोको, बल्कि उसकी हत्या कर दो- ताकि फिर कभी वह शैतानों के लिए अमृत प्राप्त करने की कोशिश न कर सके.

आपकी आज्ञा सिर आंखों पर भगवन! मैं सुबह होते ही शैतानघाटी रवाना हो जाऊंगा- लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आई. औघड़नाथ को जाप करने से रोकना और हत्या करना दोनों ही काम आपके वश में हैं, फिर यह आप मुझसे क्यों करवाना चाहते हैं?

क्योंकि यह काम तुम आसानी से कर सकते हो- अगर हम देवताओं ने औघड़नाथ को मारने की कोशिश की तो धरती पर देवताओं और शैतानों के बीच युद्ध छिड़ जाएगा- नतीजा यह होगा कि धरती नष्ट हो जाएगी!

मैं समझ गया भगवन! आप निश्चिन्त रहें- मैं औघड़नाथ को खत्म करने के लिए अपनी जान लड़ा दूंगा!
अच्छा मैं चलता हूं... तुम घबराना मत! हम देवताओं की शक्तियां तुम्हारी रक्षा करेंगी!

सुबह ताऊ जी की आंख खुली तो उन्हें रात वाला सपना याद आ गया।
औघड़नाथ का शाप पूरा होने में सिर्फ चार दिन रह गए हैं· इसलिए मुझे फौरन शैतानघाटी रवाना हो जाना चाहिए

ताऊ जी जल्दी-जल्दी नहा-धोकर तैयार हुए और नाश्ता करने लगे।
क्या बात है ताऊ जी, आप इतनी जल्दी क्यों कर रहे हैं, कहीं जाना है क्या?
हां, जादुई डण्डे! फौरन शैतान घाटी चलना है।

श··शैतान घाटी!?
हां! लेकिन तुम शैतान घाटी का नाम सुनकर इतना घबरा क्यों गए हो?

आप शैतान घाटी के बारे में ठीक से नहीं जानते ताऊ जी! वहां दुनिया की एक से बढ़ कर एक शैतानी शक्तियां मौजूद हैं·· अगर हम वहां गए तो हमारा वहां से बच कर आना मुश्किल हो जाएगा!
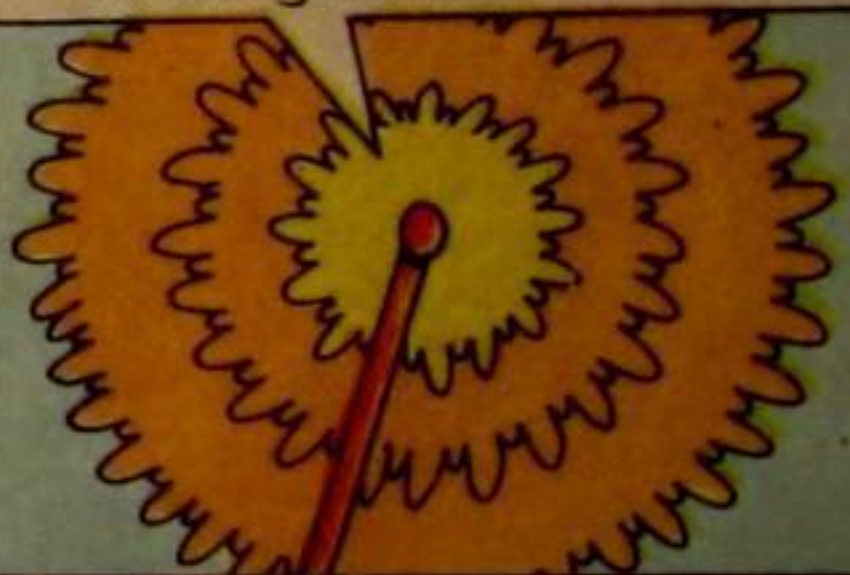
मेरा कहना मानिए-शैतान घाटी जाने का विचार त्याग दीजिए!
नहीं, जादुई डण्डे! हमें शैतान घाटी हर हालत में जाना होगा!
कहकर ताऊ जी ने रात वाले सपने की बात बताई।

अगर यह बात है तो हमें वहां जरूर जाना चाहिए-देवताओं के लिए हमारी जान भी चली जाए तो गम न होगा!
शाबाश! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी जादुई डण्डे!

और फिर कुछ देर बाद ताऊ जी जादुई डण्डे के साथ शैतान घाटी की ओर रवाना हो गए।

उधर शैतान घाटी में-

महाराज शैतानसिंह की जय हो! गुप्तचर भीमा आपसे मिलने की आज्ञा चाहता है!

आज्ञा है!

कुछ देर बाद-

महाराज शैतानसिंह की जय हो!

कहो भीमा क्या खबर लाए हो?

महाराज, खबर बड़ी विचित्र है! मैं देवलोक की निगरानी पर नियुक्त हूं. कल रात मैंने ब्रह्मा जी को पृथ्वी की ओर जाते देखा तो मैंने उनका पीछा किया- वह पृथ्वी पर ताऊ जी नामक व्यक्ति के घर पहुंचे- और उसे औघड़नाथ के जाप को रोकने और उसकी हत्या करने का आदेश देकर वापस आ गए!

खबर तो सचमुच बहुत विचित्र है. लेकिन इस खबर से हमें यह पता चल गया कि देवता हमसे डर गए हैं. तभी तो उन्होंने हमारे खिलाफ इंसानों से सहायता मांगी है.

महाराज, ब्रह्मा जी ने इंसानों से नहीं सिर्फ एक इंसान से सहायता मांगी है. इसका मतलब है उस इंसान में जरूर कोई खास बात होगी. हमें जल्द से जल्द ताऊ जी के बारे में पूरी जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए.
आप ठीक कह रहे हैं महामंत्री जालिमसिंह जी!

हमारे खास गुप्तचर कालू को बुलाया जाए!

कुछ देर बाद कालू, महाराज शैतानसिंह के सामने था।
आज्ञा महाराज!
कालू, मुझे ताऊ जी नाम के एक व्यक्ति के बारे में जल्द से जल्द पूरी जानकारी चाहिए!

काम हो जाएगा महाराज! बस इतना बता दीजिए ताऊ रहता कहां है?
भीमा तुम्हें उसका घर बता देगा!

भीमा, तुम कालू को ताऊ जी का घर दिखा कर देवलोक वापस लौट जाना... और कोई खास बात हो तो मुझे फौरन खबर करना!
जो आज्ञा महाराज!

करीब एक घण्टे बाद कालू वापस आया।

क्या बात है कालू! तुम इतना घबराए हुए क्यों हो? और इतनी जल्दी क्यों वापस आ गए?

महाराज, ताऊ शैतान घाटी की ओर चल पड़ा है. इतने कम समय में मैंने उसके बारे में जो जानकारी हासिल की है उसी से मुझे घबराहट हो रही है!

उधर ताऊ जी जादुई डण्डे के साथ तेजी से शैतान घाटी की ओर बढ़ रहे थे- अचानक...

हो! हो! हो!

यह कौन लोग हैं जादुई डण्डे ?

हा! हा, हा!

यह शैतान सैना है ताऊ जी!

ही! ही! ही!

हा! हा! हा!

इसका मतलब हमारे आने की खबर शैतान घाटी पहुंच चुकी है तभी तो वहां के राजा शैतानसिंह ने मुझे मारने के लिए अपनी सेना भेजी है!

ताऊ जी शैतान सेना करीब आती जा रही है. इनसे निबटने की कोई तरकीब सोचिए!

तरकीब क्या सोचनी है जादुई डण्डे! नीचे धरती पर चलो- वहां हम इनका मुकाबला आसानी से कर लेंगे!

अगले ही पल-

मेरे बहादुर शैतानो, हमारा दुश्मन भागने की कोशिश कर रहा है! अगर यह भागने में सफल हो गया तो हमारा आका हमें शैतानी आग में झौंक देगा!

वाह ताऊ जी वाह! आपने तो कमाल कर दिया· इतनी बड़ी शैतान सैना गाजर, मूली की तरह काट डाली· चलिए··· अब यहां से चल दिया जाए!
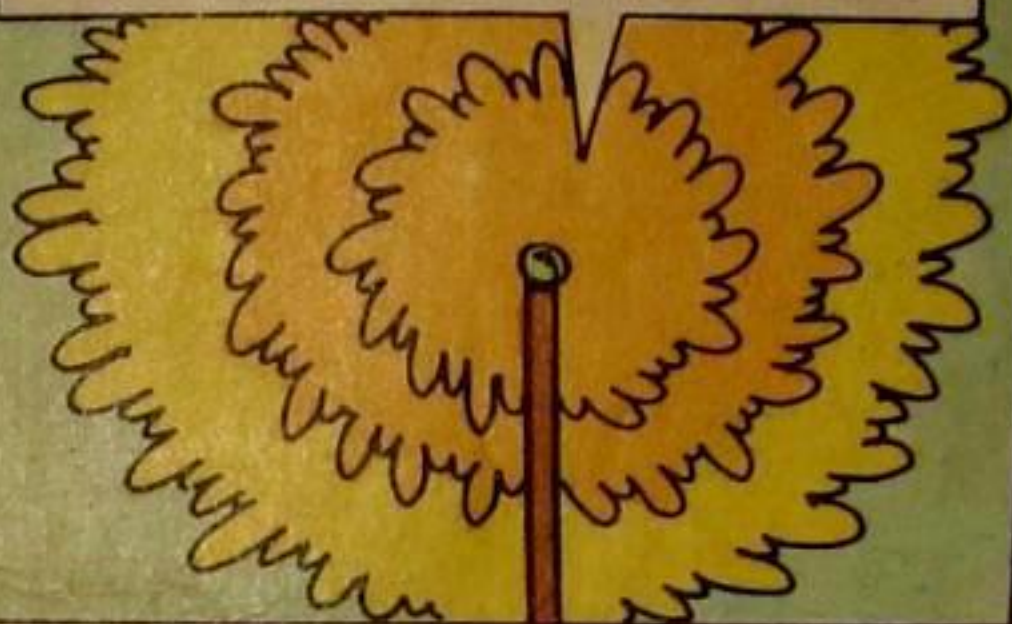
हां चलो··· लेकिन जरा सावधानी से··· शैतानसिंह हम पर फिर हमला करवाएगा!

उधर जादुई डण्डा ताऊ जी को लेकर चला··· इधर शैतान घाटी में–
महाराज, कालू सही कह रहा था··· ताऊ सचमुच हद से ज्यादा खतरनाक आदमी है··· उसने कितनी आसानी से हमारी सैना को कीड़े-मकोड़ों की तरह मार डाला!
इस युद्ध को देखकर यह भी साबित हो गया है कि ताऊ देखने में ही बूढ़ा है··· असलियत में उसके अंदर जवानों को भी मात कर देने वाली चुस्ती-फुर्ती और बहादुरी भरी पड़ी है!

सटाक

हमारी शैतान सैना का बड़े से बड़ा योद्धा भी उसका मुकाबला नहीं कर पाएगा!
तुम कहना क्या चाहते हो··· हम शैतान होकर उस इंसान ताऊ से हार मान लें?

नहीं महाराज! हम शैतानों ने देवताओं से हार नहीं मानी··· तो एक इंसान से हार क्या मानेंगे··· मैं तो यह कहना चाहता हूं कि हमें ताऊ के साथ इस तरह का युद्ध न लड़कर शैतानी युद्ध लड़ना चाहिए··· तभी हम उसे मार पाएंगे!

हाँ, महाराज! मेरी भी यही राय है!
ठीक है! तो फिर सोचो कोई शैतानी चाल!

कुछ देर सोचने के बाद-
महाराज, एक बात मेरे दिमाग में आई है!
बताओ!

महाराज, यहां पहुंचने के लिए ताऊ जी को सात समुन्द्र पार करके आना पड़ेगा... ठीक उस समय जब जादुई डण्डा उसे लेकर तीसरे यानि कि काले सागर के ऊपर उड़ रहा होगा, हम डण्डे की जादुई शक्ति को अपनी शैतानी शक्ति से बेकार कर देंगे!
हा! हा! हा! मैं समझ गया आगे क्या होगा- बहुत अच्छी चाल सोची है तुमने!
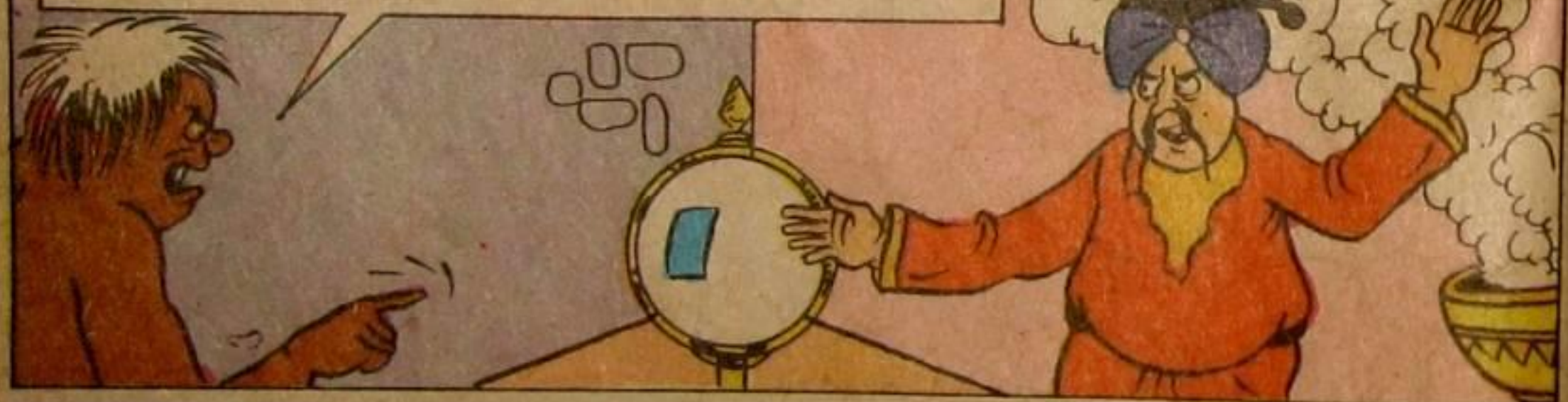
उधर-
जादुई डण्डे! वह सामने समुद्र नजर आ रहा है!
जी हां ताऊ जी! शैतान घाटी पहुचने के लिए हमें सात समुद्र पार करने होंगे!

जादुई डण्डे! मेरी छटी इन्द्रिय मुझे खतरे का संकेत दे रही है- समुद्र के ऊपर उड़ते समय हम पर जरूर कोई भयानक खतरा आएगा!

हुआ भी यही, उस समय जब जादुई डण्डा ताऊ जी को लेकर काले सागर के ऊपर से उड़ रहा था तभी–
ताऊ जी, गजब हो गया... किसी शक्तिशाली शैतानी ताकत ने मेरी जादुई शक्ति को एकदम से जाम कर दिया है! अब मैं आपको लेकर आगे नहीं उड़ सकता।
यह तो बहुत बुरा हुआ जादुई डण्डे! शैतानसिंह ने मुझे मारने के लिए यह खतरनाक चाल चली है!
जादुई डण्डे के साथ ताऊ जी का शरीर हवा में कलाबाजियाँ खाता हुआ तेजी से काले सागर की ओर बढ़ रहा था।
ताऊ जी, मेरी शक्ति तो बेकार हो गई है– आप ही कोई उपाय कीजिए, वरना एक बार हम काले सागर में गिर गए तो हमारा अन्त निश्चय है: सुना है उस समुद्र में दुनिया के सबसे भयानक समुद्री जानवर रहते हैं!
सुना तो मैंने भी यही है जादुई डण्डे! लेकिन मैं कुछ कर नहीं सकता!
आपको इतनी जल्दी हार नहीं माननी चाहिए ताऊ जी कुछ सोचिए, मुझे पूरी उम्मीद है कोई न कोई उपाय आपके दिमाग में जरूर आ जाएगा!
और फिर जैसे ही ताऊ जी का शरीर काले सागर में गिरा–
उफ! इतने बड़े-बड़े और भयानक जानवर हैं यहां, ये तो एक बार में ही मुझे निगल जाएंगे!
कुछ कीजिए ताऊ जी! इन खौफनाक जानवरों को अपनी ओर बढ़ने से रोकिए!
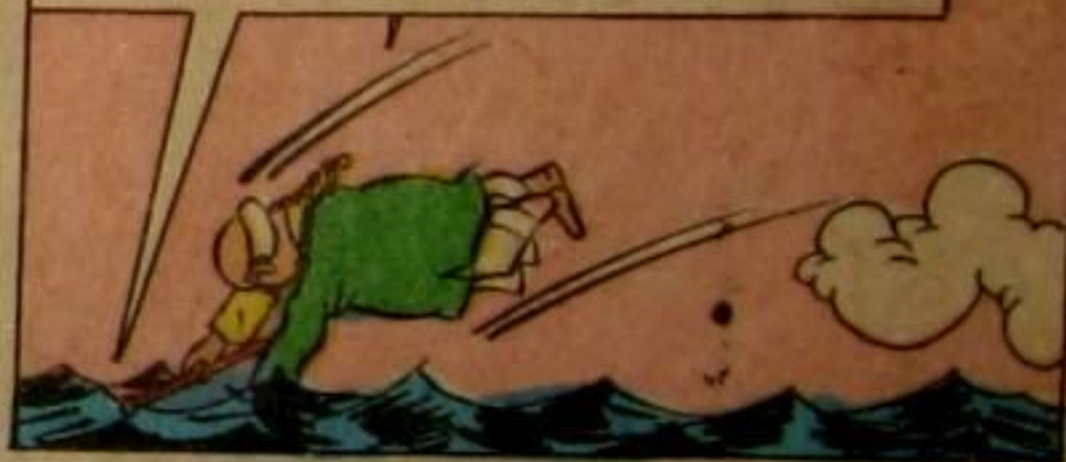
कैसे रोकूं जादुई डण्डे? तुम अच्छी तरह जानते हो पानी में तंत्र-मंत्र और जादुई शक्ति का कोई असर नहीं होता!
बहुत बुरी जगह लाकर पटका है शैतानसिंह ने हमें!
अचानक-
इन खतरनाक जानवरों पर मैं तंत्र-मंत्र और जादुई शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता तो क्या हुआ-सम्मोहन क्रिया का प्रयोग तो कर ही सकता हूं. सम्मोहिनी तरंगे पानी में भी अपना असर दिखाती हैं!
घबराओ नहीं जादुई डण्डे! मेरे दिमाग में एक उपाय आ गया है- अब यह जानवर हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगे!
हुर्रे!
और फिर ताऊ जी ने तेजी से अपनी ओर बढ़ रहे मगरमच्छ की आंखों में आंखें गड़ा दीं-
रूक जा... वहीं रूक जा... मैं ताऊ जी तुझे आदेश दे रहा हूं- अगर तूने मेरी आज्ञा नहीं मानी तो तेरा अंजाम बहुत बुरा होगा!
ताऊ जी की आंखों से निकलने वाली शक्तिशाली तरंगों ने मगरमच्छ को सम्मोहित कर दिया।
ताऊ जी आपकी तरकीब कामयाब रही-मगरमच्छ रूक गया-है- अब इसी तरह सारे जानवरों को रोक दीजिए!
यही करने जा रहा हूं जादुई डण्डे!

उसके बाद ताऊ जी ने अपनी सारी शक्ति को एक बिन्दु पर केन्द्रित किया और सारे जानवरों पर एक साथ सम्मोहित तरंगे फेंकने लगे-

तुम सब रुक जाओ... कोई अपनी जगह से आगे नहीं बढ़ेगा... जिसने भी हम पर हमला करने की कोशिश की उसका अंत हो जाएगा!

सभी जानवर सम्मोहित होकर अपनी-अपनी जगह रुक गए।

ताऊ जी, एक समस्या से तो हमें छुटकारा मिल गया-यह जानवर तो अब हम पर हमला करेंगे नहीं-अब यह सोचिए कि इस सागर को आप कैसे पार करेंगे-तैर कर तो पार नहीं कर सकते?

क्यों न इन जानवरों में से किसी को हम अपनी सवारी बना लें?

विचार बुरा नहीं ताऊ जी... मेरे ख्याल से मगरमच्छ सवारी के लिए ठीक रहेगा-क्योंकि उसकी पीठ पर आप आराम से बैठ सकते हैं!

ठीक है!

उधर-

महाराज, हमारी यह चाल भी बेकार हो गई. ताऊ के पास हमारी हर चाल की काट मौजूद है.

देखता हूं कब तक बचता है!

और फिर तूफान आ गया। समुद्र की लहरें आकाश छूने लगी।

कुछ कीजिए ताऊ जी... हम इन भयानक लहरों का सामना ज्यादा देर तक नहीं कर पाएंगे... हमारे चिथड़े उड़ जाएंगे.
फिक्र मत करो जादुई डण्डे! हमारे चिथड़े उड़ाना इतना आसान नहीं- हम इस मुसीबत से भी बच जाएंगे!

लेकिन कैसे?
तूफान का प्रकोप समुद्र की ऊपरी सतह पर रहता है- गहराई में नहीं- हम गहराई में चले चलते हैं!
तो फिर चलिए!

ताऊ जी ने सम्मोहन तरंगों द्वारा मगरमच्छ को आदेश दिया।
हमें फौरन समुद्र की गहराई में ले चलो!

अगले ही पल मगरमच्छ ताऊ जी को लेकर समुद्र के अन्दर समाता चला गया।
आपने बिल्कुल सच कहा था ताऊ जी!
गहराई में तूफान का जरा सा भी असर नजर नहीं आ रहा- बल्कि यहां तो ऊपरी सतह से ज्यादा शांति है!

इसके बाद बिना किसी रुकावट के ताऊ जी का सफर जारी रहा-
जादुई डण्डे! इस मगरमच्छ पर सफर करते हुए हम शैतान घाटी पहुंच तो जाएंगे लेकिन इस तरह हमारा काफी समय बरबाद हो जाएगा. शायद तब तक औघड़नाथ अपना जाप भी पूरा करले.
लेकिन इससे ज्यादा जल्दी तो हम कर भी नहीं सकते!
एक उपाय है, हम ऊपरी सतह पर वापस चलते हैं, अगर तूफान थम चुका होगा तो किसी टापू की तलाश करेंगे!
लेकिन टापू तलाश करने से होगा क्या?
तुम्हारी जादुई शक्ति पानी में होने के कारण कुछ कमजोर पड़ गयी थी. इसी बात का फायदा उठा कर किसी शैतान शक्ति ने उसे जाम कर दिया था!
... लेकिन धरती पर तुम्हारी शक्ति कमजोर नहीं रहेगी... तुम टापू की धरती पर पहुंचकर अपनी शक्ति के जोरदार झटके देना- मुझे पूरी उम्मीद है तुम्हारी जादुई शक्ति शैतानी शक्ति की पकड़ से आज़ाद हो जाएगी!
ठीक है ताऊ जी! चलिए!
और फिर वह समुद्र की ऊपरी सतह पर आ गए- जहां तूफान थम चुका था- कुछ देर बाद-
वह देखिए ताऊ जी! समुद्र का पानी भूरा-भूरा नज़र आ रहा है- ज़रूर वहां कोई टापू है!
चलो, चल कर देख लेते हैं!

थोड़ा और आगे बढ़ने पर-
तुम्हारा अंदाजा बिल्कुल ठीक था जादुई डण्डे! वह कोई टापू ही है.
इसका मतलब किस्मत हमारा साथ दे रही है!

जल्दी ही ताऊ जी जादुई डण्डे के साथ टापू की धरती पर पहुंच गए।
अब तुम अपना काम शुरू कर दो!

अगले ही पल जादुई डण्डे ने अपनी जादुई शक्ति को झटके देने शुरू किए-

कुछ ही देर बाद-
ताऊ जी, आपकी तरकीब कामयाब रही... मेरी जादुई शक्ति शैतानी शक्ति की पकड़ से आजाद हो गई है!
ठीक है! तुम मुझे लेकर 'फौरन शैतान' घाटी की ओर उड़ चलो!
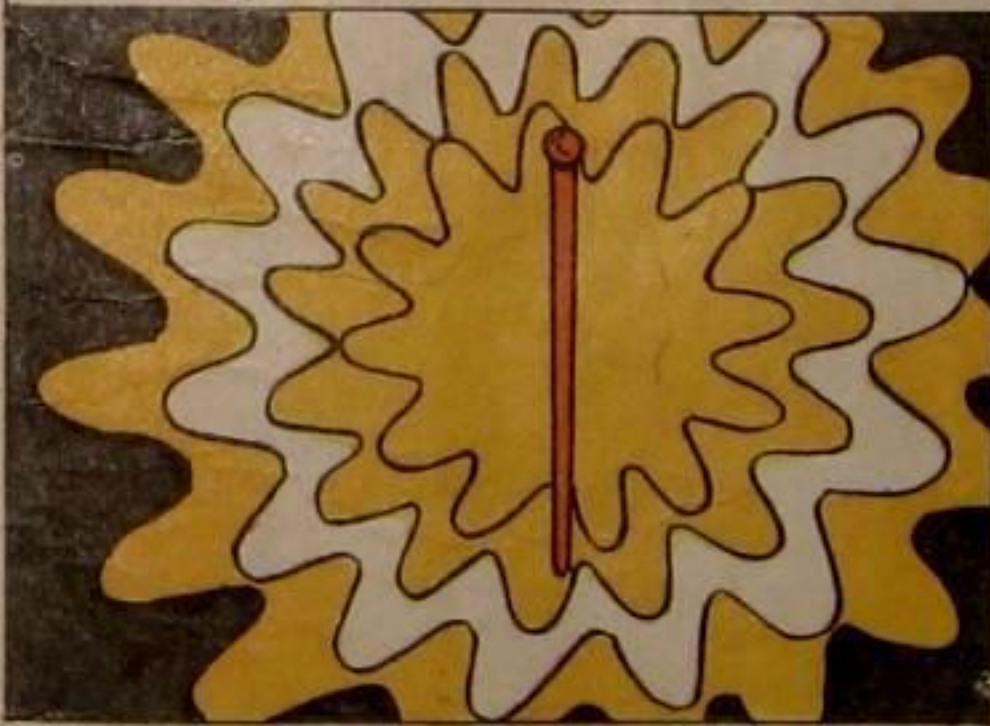
जादुई डण्डा ताऊ जी को लेकर उड़ चला- जल्दी ही वह शैतान घाटी पहुंच गए-
ताऊ जी सावधान! हम शैतान घाटी में प्रविष्ठ हो चुके हैं. यहां कदम-कदम पर हमें मौत से मुकाबला करना होगा!
घबराओ नहीं जादुई डण्डे!

उधर-
सैनापति जल्लादसिंह-हमारी हर कोशिश के बावजूद हमारा दुश्मन ताऊ हमारी शैतान घाटी में आ गया है... यह हमारी बहुत बड़ी हार है ! हम शैतानों के लिए डूब मरने की बात है !
महाराज ! अपनी हार को हम अब भी जीत में बदल सकते हैं !

कैसे ?
ताऊ यहां औघड़नाथ को मारने आया है... उसके जाप के अड़तीस दिन पूरे हो चुके हैं. दो दिन बाद उसका जाप पूरा हो जाएगा ! हम शैतानों को अमृत प्राप्त हो जाएगा. ताऊ जीत कर भी हार जाएगा !

...बस हमें सिर्फ इतना करना है कि हम किसी भी हालत में दो दिन तक ताऊ को औघड़नाथ तक न पहुंचने दें !
बात तो तुम्हारी ठीक है, लेकिन सवाल तो इस बात का है कि ताऊ को दो दिन तक औघड़नाथ तक पहुंचने से कैसे रोका जाए ? हमारी कोई भी शैतानी शक्ति उस पर असर भी तो नहीं कर रही है !

हमारी शैतान शक्तियां ताऊ पर असर भले ही न करें, पर लगातार आक्रमण करके उसे दो दिन तक रोक जरूर सकती हैं !
तुम ठीक कह रहे हो !

सेनापति जल्लादसिंह, पहला काम तो तुम यह करो कि औघड़नाथ की सुरक्षा के इंतजाम और कड़े कर दो और दूसरा काम यह करो कि अपनी सारी शैतानी शक्तियों से कहो ताऊ के रास्ते में कांटे बनकर बिछ जाएं ! और उस पर हर पल आक्रमण किया जाए, ताकि वह औघड़नाथ तक न पहुंच सके !
जो आज्ञा महाराज !

उधर जादुई डण्डा ताऊ जी को लेकर तेजी से आगे बढ़ता आ रहा था अचानक...
उफ! इतने विशाल बाज तो मैंने आज तक नहीं देखे.
यह सब शैतानी शक्तियों का कमाल है.
चीं-चीं-
चीं-चीं-चीं
चीं-चीं-

जादुई डण्डा फौरन तलवार में बदल गया।
शैतानसिंह, तेरी यह बचकाना चालें ताऊ जी को औघडनाथ तक पहुंचने से नहीं रोक सकतीं.
खचाक

जादुई डण्डे, खुले आसमान में हम इन भयानक परिन्दों से ज्यादा देर तक मुकाबला नहीं कर पाएंगे. इसलिए नीचे धरती पर चलो-वहां हम इनसे आसानी से निपट सकते हैं!
खचाक
खचाक

जादुई डण्डा ताऊ जी को लेकर धरती की ओर बढ़ने लगा-

इससे पहले कि जादुई डण्डा ताऊ जी को लेकर धरती पर पहुंच पाता, एक बाज ने उन पर झपट्टा मारा-
आह!
क्या हुआ ताऊ जी?

बाज ने मेरी पीठ पर पंजा मार दिया है-मुझ पर बेहोशी छा रही है!
अपने आप पर काबू पाइए ताऊ जी-अगर आप बेहोश हो गए तो शैतानी जहर आपके पूरे बदन में फैल जाएगा-और फिर दुनियां की कोई ताकत आपको नहीं बचा पाएगी

अपने ध्यान को केन्द्रित कीजिए ताकि जहर फैलने न पाए-धरती पर पहुंचकर मैं वह जहर आपके शरीर से खींच लूंगा.
ठीक है, मैं अपना ध्यान एक जगह पर केन्द्रित करने की कोशिश करता हूं!

फिर जादुई डण्डा ताऊ जी को भयानक परिन्दों से बचाता हुआ धरती पर पहुंच गया।
ताऊ जी! परिन्दों को यहां तक पहुंचने में कुछ पल लगेंगे· आप जल्दी से जमीन पर औंधे लेट जाइए...ताकि मैं आपके शरीर से जहर खींच सकूं!

ताऊ जी औंधे लेट गए।
जादुई डण्डे ने अपनी जादुई शक्ति से ताऊ जी के शरीर में फैल रहा जहर खींच कर बाहर उगल दिया।

ताऊ जी, मैंने आपके शरीर से जहर तो निकाल दिया है फिर भी आपको सम्भलने में कुछ देर लगेगी, आप लेटे आराम करते रहिए· तब तक मैं अपनी हिफाजत करता हूं!
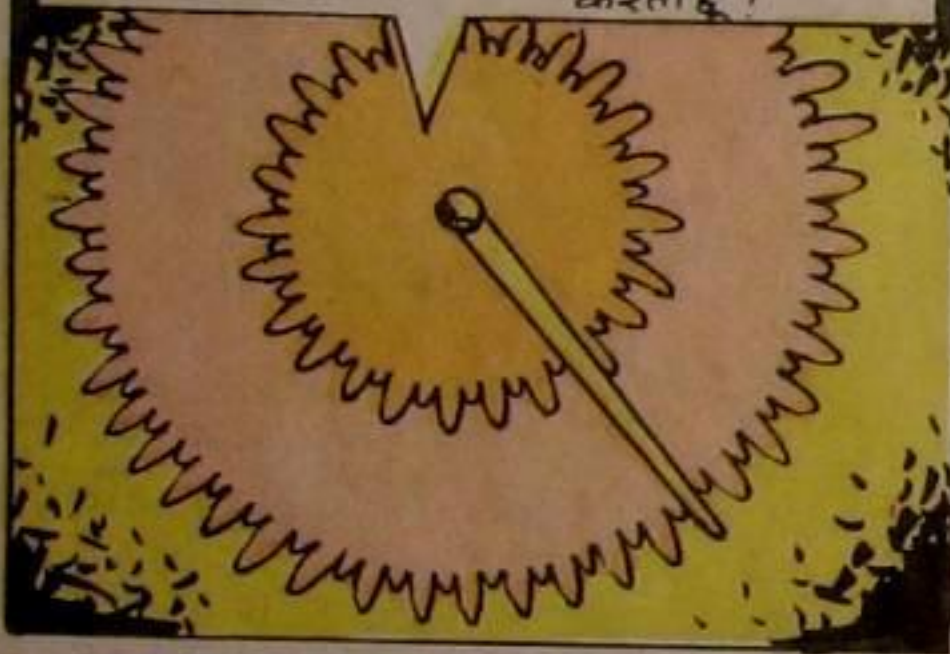
जादुई डण्डे ने एक बार फिर तलवार का रूप धारण किया· और...
खचाक
खचाक

कुछ देर बाद ताऊ जी की हालत सुधर गई·
जादुई डण्डा इन परिन्दों से अकेले ही निपट रहा है· इसे अपने हाथ में लेने से अच्छा है कि मैं अपनी रक्षा के लिए पेड़ की एक डाल तोड़ लूं·

अगले ही पल उन्होंने पास के एक पेड़ से पतली लचकदार डाल तोड़ ली–
सड़ाक!
चीं... चीं...
शैतानी परिन्दो-अब तुम्हें जादुई डण्डे के साथ-साथ इस डाल की कोड़े जैसी मार से भी बचना पड़ेगा!

यह आपने बहुत अच्छा किया ताऊ जी! अब हम इन परिन्दों से अच्छी तरह निपट सकते हैं!
खचाक
सड़ाक

जादुई डण्डे! हमें सिर्फ इन परिन्दों से निपटना ही नहीं है बल्कि आगे भी बढ़ते रहना है। क्योंकि हमारे पास ज्यादा समय नहीं है... दो दिन के अन्दर हमें शैतानसिंह के महल पहुंचकर जाप पूरा होने से पहले ही औघड़नाथ की हत्या करनी है!

ठीक है! फिर तो हम इन परिन्दों को मारते हुए आगे बढ़ेंगे!

और फिर वह आगे बढ़ने लगे—
खचाक
सड़ाक
चीं...चीं...

देखते ही देखते परिन्दों की संख्या कम होने लगी फिर अचानक ही बचे हुए परिन्दे वापस लौट गए।
चलो, अच्छा हुआ...पीछा तो छूटा इन कमबख्तों से!

अभी ताऊ जी जादुई डण्डे के साथ कुछ ही दूर जा पाए होंगे कि अचानक—
अरे...यह क्या हो रहा है! मैं कहां खिंचा चला जा रहा हूं? जादुई डण्डे मुझे पकड़ो!

उससे पहले कि जादुई डण्डा ताऊ जी को पकड़ पाता-वह तीर की तरह खिंचते हुए एक पेड़ से जा चिपके।
जादुई डण्डे, यह खून पीने वाला पेड़ है- मुझे फौरन इससे छुटकारा दिलाओ-- वरना कुछ ही देर में यह मेरा सारा खून चूस लेगा.
घबराइए मत ताऊ जी! मैं अभी इसकी डालें काट कर आपको इससे छुड़ाता हूं.

अगले ही पल-
खचाक

...जादुई डण्डा तेजी से डालें काट रहा था लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकल रहा था- वह एक डाल काटता था तो दो डालें ताऊ जी के शरीर से लिपट जाती थीं.
खचाक

जादुई डण्डे! डालें काटने में समय बरबाद मत करो- पेड़ की जड़ काटो!
ओह! यह काम तो मुझे पहले ही करना चाहिए था.

फिर जादुई डण्डा पेड़ की जड़ काटने में जुट गया।
खट..
खट..

कुछ ही देर में जादुई डण्डे ने पेड़ को काट गिराया।

ताऊ जी डालों से अपने आपको छुड़ा कर निकल आए।
ओह! यह कम्बख्त एक आध किलो खून तो पी ही गया होगा मेरा!

जितना सुना था उससे कहीं ज्यादा भयानक निकली यह शैतान घाटी!
सचमुच यहां तो कदम-कदम पर मौत खड़ी रहती है।

थोड़ा सुस्ता कर ताऊ जी जादुई डण्डे के साथ फिर आगे बढ़ने लगे।

अचानक-
गुर्र र्र..

ताऊ जी ने बचने की बहुत कोशिश की लेकिन वह बच न सके.
गुर्र..ई..
आह!

शेर अपने भयानक पंजों से ताऊ जी को लहू लुहान करने लगा।

जादुई डण्डा ताऊ जी को बचाने के लिए आगे बढ़ा-
लेकिन ताऊ जी ने उसे रोक दिया।

एक बार इसके जबड़े मेरे हाथों में आ जाएं फिर मैं इसे मजा चखवाऊंगा!

कुछ देर की कोशिश के बाद शेर के जबड़े ताऊ जी के हाथ में आ ही गए।
देख, मेरी बूढ़ी हड्डियों में कितनी ताकत है.
चर्र-र्र..

उधर-
महाराज! ताऊ हमारी शैतानी शक्तियों को एक एक करके नष्ट करता हुआ आगे बढ़ता आ रहा है!

जिस रफ्तार से वह आगे बढ़ रहा है उससे लगता है वह आज शाम तक यहां पहुंच जाएगा!

अब ताऊ को औघड़नाथ तक पहुंचने से रोकने और उसे खत्म करने के लिए, हमारे पास एक ही तरीका रह गया है!
कौन सा तरीका महाराज?

शैतानी चक्रव्यूह का निर्माण: जिसमें फंस कर ताऊ औघड़नाथ तक न पहुंच सके... और मारा जाए

शैतानी चक्रव्यूह वाला तरीका तो सचमुच बहुत अच्छा है महाराज!
ठीक है! तो फिर जाइए शाम होने से पहले ही शैतानी चक्रव्यूह का निर्माण करवा डालिए!

उधर ताऊ जी और जादुई डण्डा रास्ते में आने वाली शैतानी शक्तियों को मारते हुए शैतानसिंह के महल तक पहुंच गए।
आश्चर्य है! महल के द्वार पर एक भी दरबान नजर नहीं आ रहा है!
मुझे लगता है शैतानसिंह ने महल के अन्दर हमें फंसाने के लिए कोई नया जाल बिछा रखा है!

फिर हमें क्या करना होगा ?
करना क्या है, अंदर चलते हैं... जिस तरह अभी तक हम शैतान-सिंह की चालों और हमलों को बेकार करते आ रहे हैं उसी तरह महल में घुसकर उसकी अगली चाल भी बेकार करेंगे !
ताऊ जी और जादुई डण्डा पूरी सावधानी के साथ महल में प्रविष्ट हुए।
लगता है, महल में कोई मौजूद ही नहीं है... कहीं हम गलत जगह पर तो नहीं आ गए ?
हम बिल्कुल सही जगह पर पहुंचे हैं. यहां सन्नाटा सिर्फ इसलिए है क्योंकि सारे शैतान हमें खत्म करने के लिए किसी खास जगह पर जमा होंगे- उसी स्थान के आस-पास कहीं औघड़नाथ जाप कर रहा होगा.
चलते-चलते ताऊ जी महल के अंदरूनी भाग में पहुंच गए।
ताऊ जी, वह देखिए- औघड़नाथ जाप कर रहा है. चलिए चलकर फौरन उसकी हत्या कर देते हैं !
ठहरो जादुई डण्डे! जल्दबाजी हमारी मौत बन सकती है. इसलिए पहले मामले को अच्छी तरह जांच परख लो...

कुछ देर बाहर खड़े रह कर ताऊ जी कमरे का निरीक्षण करते रहे- जब उन्हें पूरा यकीन हो गया कि अंदर किसी प्रकार का खतरा नहीं है तब वह जादुई डण्डे के साथ अन्दर प्रविष्ट हुए- उनके अन्दर पहुंचते ही कमरे का दरवाजा अपने आप बंद हो गया।
यह क्या गोरख धंधा है ताऊ जी? यहां तो चारों ओर औघड़नाथ ही औघड़नाथ नजर आ रहा है!
मेरा शक सही निकला-शैतानसिंह ने हमें शैतान चक्रव्यूह में फंसा दिया है!
अब क्या होगा ताऊ जी! क्या इस शैतान चक्रव्यूह में फंस कर हमारा अंत हो जाएगा?
घबराओ मत जादुई डण्डे! इस चक्रव्यूह को तोड़ना मुश्किल जरूर होगा-पर असम्भव नहीं- हम अगर कोशिश करें तो इसे तोड़ने में सफल हो जाएंगे!

तभी-

ताऊ जी; इस चक्रव्यूह को बाद में तोड़ना- पहले अपने आपको बचा लो!

खटट

शैतानसिंह, मुझे मारना इतना आसान नहीं जितना तुम समझ रहे हो!
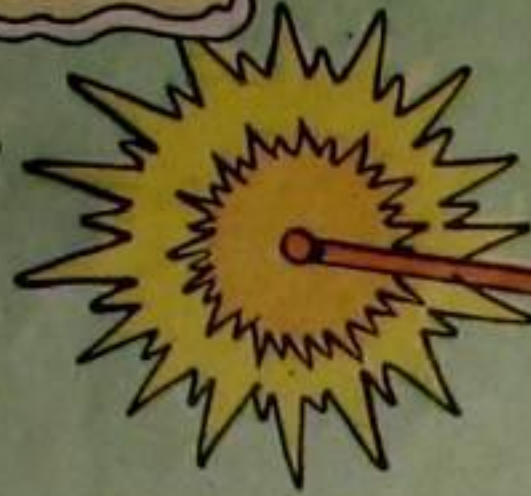
ताऊ जी चक्रव्यूह के केन्द्रबिन्दु पर पहुंच गए- और चारों ओर नजरें दौड़ाने लगे-

अगले ही पल-
नकली पुतले सांस नहीं ले सकते. जबकि असली औघड़नाथ सांस ले रहा होगा. मुझे अपना सारा ध्यान पुतलों के सीने पर लगाना चाहिए! सांस लेने की क्रिया ही असली, नकली औघड़नाथ का भेद खोल सकती है!
खट
खट
खट

काफी देर बाद ताऊ जी की नजरें एक पुतले पर जाकर जम गई.
इस पुतले का सीना धीरे-धीरे उठ रहा है. इसका मतलब यह सांस ले रहा है.

जादुई डण्डे मैंने असली औघड़नाथ को पहचान लिया है. मैं उसकी ओर बढ़ रहा हूं. तुम भी आओ.
ठीक है, ताऊ जी!

ताऊ जी पुतले पर नजर जमाए दीवार के पास पहुंच गए।
जादुई डण्डे! इस पारदर्शी दीवार को तोड़ दो. इसी के पीछे असली औघड़नाथ बैठा है.
अभी लीजिए!

अगले ही क्षण-
चटाक

दीवार टूटते ही ताऊ जी जादुई डण्डे के साथ दूसरी ओर पहुंचे- तभी-
हमारे रहते तुम औघड़नाथ को नहीं मार पाओगे।
हम अपनी जान देकर उनकी रक्षा करेंगे।

ठीक है! तो फिर लो पहले तुम दोनों को ही खत्म करता हूं!
खचाक
खचाक

दोनों को मार कर ताऊ जी औघड़नाथ के पास पहुंचे-
तू जिस हालत में है उस हालत में तुझे मारते हुए अच्छा तो नहीं लगता-पर कभी-कभी दुनिया की अच्छाई के लिए गलत काम करना ही पड़ता है।
खचाक

उधर-
ताऊ ने न सिर्फ चक्रव्यूह तोड़ डाला, बल्कि महामंत्री, सेनापति और औघड़नाथ को भी मार डाला- अब अगर मैं यहां रुका तो वह मुझे भी मार डालेगा- इसलिए मुझे फौरन शैतान घाटी छोड़ देनी चाहिए- जाते-जाते उस घाटी को नष्ट कर दूं ताकि इसके साथ-साथ मेरा दुश्मन ताऊ भी समाप्त हो जाए-

ताऊ जी शैतानसिंह को तलाश कर रहे थे- तभी-
जादुई डण्डे लगता है यहां भूकम्प आ गया- इससे पहले कि इस घाटी में हमारी कब्र बन जाए, हमें फौरन यहां से निकल चलना चाहिए-
शैतानसिंह का क्या होगा?
धड़ाम

जादुई डण्डा ताऊ जी को लेकर महल से निकल आया-
मेरे ख्याल से शैतानसिंह महल के मलबे में दब कर मर गया होगा- अगर बच भी गया तो बच जाने दो- हमारा असली मकसद तो औघड़नाथ को मारना था, जिसे हम मार चुके हैं!
समाप्त

ताऊ जी और अनोखा दुश्मन

सम्पादक: गुलशन राय

लेखक: अश्वनी 'आशू'

चित्रकार: अमन

ताऊ जी,

शायद आपको तो याद होगा नहीं, लेकिन मैं जीवन भर नहीं भूल सकता कि आपके कारण मुझे अपनी जिन्दगी के चार वर्ष जेल की चारदीवारी के भीतर बिताने पड़े थे. अब मैं जेल से बाहर आ गया हूं और यह कसम खाई है कि मैं आपको भी जेल भिजवाकर ही रहूंगा. क्योंकि सौभाग्य से एक जादूगर ने मरते समय अपनी एक जादुई शक्ति मुझे उपहार में दे दी थी. उसी जादुई शक्ति की मदद से मैं तुम्हें भी उसी प्रकार जेल पहुंचा दूंगा जैसे तुमने मुझे पहुंचाया था... मेरी उस जादुई शक्ति का एक छोटा सा चमत्कार तो तुम अभी उसी समय देख लोगे जब तुम यह पत्र पूरा पढ़ चुकोगे....

आपका शुभचिंतक
अजनबी दुश्मन.
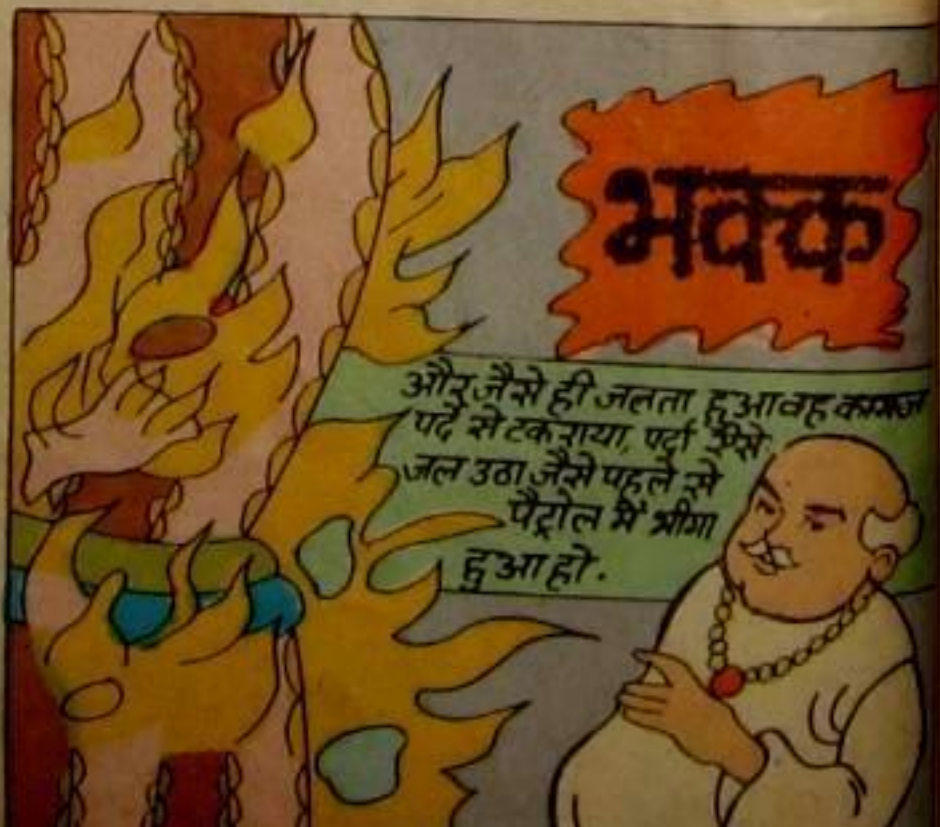
पर्दे में आग लगाने के बाद वह जलता हुआ कागज कमरे में मौजूद विशाल पलंग पर आ गिरा.
और पर्दे की भांति ही पलंग ने भी पलक झपकते ही आग पकड़ ली.
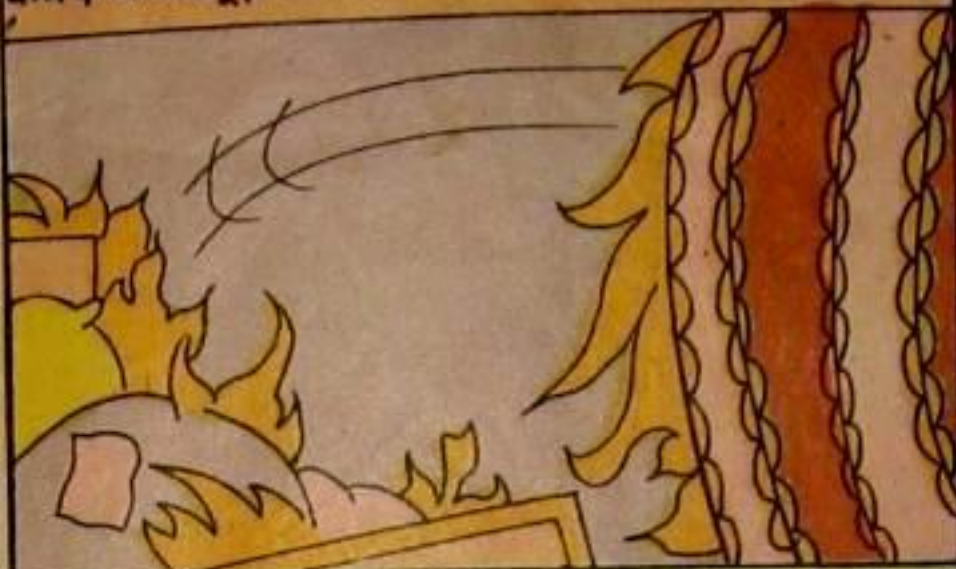
उफ... यह क्या हो रहा है ताऊ जी? म...मैं फायर बिग्रेड को टेलीफोन पर इस आग की सूचना दूं.

नहीं रूमझुम... यह सुदूरघाती जादुई शक्ति के द्वारा लगाई गई आग है. फायर बिग्रेड इस आग को उस समय तक नहीं बुझा पाएगी जब तक हमारा पूरा बंगला जलकर राख नहीं हो जाता.

फिर आप ही कुछ कीजिए... क्योंकि यह बंगला आपने किसी जादुई शक्ति से नहीं बल्कि अपनी मेहनत की कमाई से बनवाकर खड़ा किया है.
हां... मैं ही कुछ कोशिश करता हूं.

और अब वह जलता हुआ कागज हवा में उड़ता हुआ कमरे से बाहर जा रहा था... तभी ताऊ जी के बंगले के बाकी हिस्सों को आग से बचाने के लिए अपने जादुई डण्डे को याद किया.
जादुई डण्डे...

पलक झपकते ही उनका जादुई डंडा जिसे ताऊ जी ने अपनी गुप्त तिजोरी में रखा हुआ था. वह उस बंद तिजोरी में से अपने आप बाहर निकला.
और...
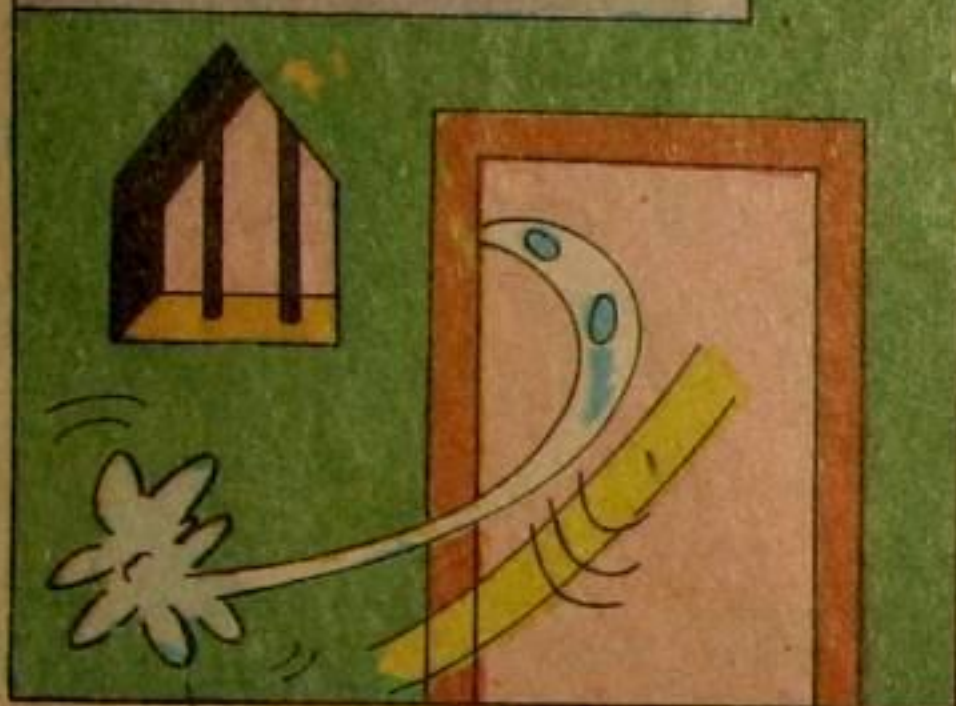
और उस धार में से अलग-अलग दिशा में अनेक धारें फूटकर आग पर गिरने लगीं...

लेकिन अब आप यह याद करने की कोशिश कीजिए ताऊ जी, कि आपका वह अजनबी दुश्मन है कौन ?

कैसे याद करूं, मुझे तो उन अपराधियों की गिनती तक याद नहीं है जिन्हें आज तक मैंने मय सबूतों के पकड़कर पुलिस के हवाले किया था और अदालत ने उन्हें सजा सुनाई थी।

ऐसे अपराधियों को याद कीजिए जिन्हें अदालत ने चार वर्ष की जेल यात्रा के लिए भेजा था और जो अब जेल से छूट चुके हैं.

इतनी पुरानी बात सिर्फ एक कम्प्यूटर ही अपनी मैमोरी में सुरक्षित...
...रख सकता है, रूमझुम.

जादुई डण्डे की मदद लीजिए शायद यह बता सके.
हां- ऐसा किया जा सकता है.

बताओ जादुई डण्डे... कौन है हमारा वह अजनबी दुश्मन जिसने सुदूरघाती जादुई शक्ति से यहां आग लगाई थी?

आपका वह अज्ञात शत्रु निःसंदेह यह बात जानता है कि आप मेरे द्वारा उसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं. इसीलिए...

उसने अपने आप को जादुई धुन्ध के आवरण में छुपाया हुआ है और मैं उस जादुई धुन्ध के आवरण को भेदने में असमर्थ हूं.
ओह!
यह तो बता सकते हो कि वह जादुई धुन्ध का आवरण बना कहां हुआ है?

लेकिन इससे पहले कि जादुई डण्डा कोई जवाब दे पाता... सहसा ही पुलिस का कर्कश सायरन वातावरण में गूंज उठा.
प... पुलिस सायरन!

और यह आवाज तो हमारे बंगले की ओर आती महसूस हो रही है.

लगता है हमारे बंगले में लगी आग को देखकर हमारे किसी पड़ोसी ने पुलिस तथा फायर ब्रिगेड को फोन कर दिया होगा.

नहीं ताऊ जी, वह आग अभी सिर्फ बंगले के अन्दर ही अन्दर फैली थी.

...जो बाहर से किसी को नज़र नहीं आ सकती थीं.
फिर यह पुलिस जीप हमारे बंगले में क्यों दाखिल हो रही है...?

पुलिस आपको गिरफ्तार करने आई है- ताऊ जी!

क... क्या? ताऊ जी को गिरफ्तार करने! मगर क्यों? ताऊ जी ने ऐसा क्या कर दिया जो...

अचानक ही ताऊ जी के बंगले में जादुई शक्ति के द्वारा एक गुप्त तहखाने का निर्माण हो गया है... और उस गुप्त तहखाने में अपने आप ही वह सारा सोना पहुंच गया है- जो भारत सरकार का है.

अर्थात रिजर्व बैंक में रखा हमारे देश का सारा सोना इस समय हमारे बंगले के एक गुप्त तहखाने में है...?

जी हां, और...!

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि यह शरारत भी हमारे उसी अज्ञात दुश्मन की है जिसने अभी- अभी हमारे बंगले में आग लगाई थी... उसने सुदूरघाती जादुई शक्ति के द्वारा...

... हमारे बंगले के नीचे गुप्त तहखाने का निर्माण किया, फिर रिजर्व बैंक में रखा भारत सरकार का सारा सोना गायब करके उस गुप्त तहखाने में पहुंचा दिया.

और अ ने पुलिस को यह सूचना दे दी होगी कि रिजर्व बैंक में रखा भारत सरकार का सारा सोना...

... ताऊ जी ने गायब करके अपने बंगले के गुप्त तहखाने में इकट्ठा कर लिया है.

अचानक उस कमरे में पुलिस अफसर दाखिल हुआ.
बिल्कुल यही बात है और यह मैं अपनी आंखों से देखकर आ रहा हूं कि रिजर्व बैंक के उस विशाल स्ट्रांग रूम का इस्पाती दरवाजा मोम की तरह पिघला हुआ है तथा स्ट्रांग रूम खाली पड़ा है ! ... उस स्ट्रांग रूम में रखा हमारे देश का सारा सोना गायब है और पुलिस को यह गुप्त सूचना देने वाले अज्ञात व्यक्ति ने हमें उस गुप्त तहखाने...

''' तक पहुंचने का रास्ता भी बताया है. जो आपके इसी बेडरूम के साथ संलग्न है.
ओह !
हुम्म !

क्या... बतायेंगे कि वह रास्ता कैसे नज़र आएगा?
बहुत खूब ! अपने गुप्त तहखाने का रास्ता हमीं से पूछ रहे हैं. ठीक है ऐसे ही सही.

सिपाही, इस दरवाजे के पास लगा बटन दबाओ.

जैसे ही सिपाही ने बटन दबाया. उसके साथ छुपा एक गुप्त रास्ता प्रकट हो गया. जिसमें से नीचे उतरने के लिए पक्की सीढ़ियां नज़र आ रही थीं.
कमाल है !
यह तो कुछ भी कमाल नहीं. असली कमाल तो तुम्हारे ताऊ जी ने कर दिखाया है.

अपनी शराफत की आड़ में इन्होंने वह डकैती डाली है, जो डकैती दुनिया का कोई बड़े से बड़ा डकैत भी नहीं डाल सकता.

मगर तभी जादुई डण्डे ने सीधे ताऊ जी के मस्तिष्क में अपनी आवाज पहुंचाते हुए कहा.
सावधान ताऊ जी... तहखाने में इस पुलिस अफसर की जान को खतरा है. आपका अज्ञात दुश्मन आप पर यह इल्जाम भी लगवाना चाहता है कि आपने अपनी गिरफ्तारी के लिए आए पुलिस अफसर की हत्या कर दी.
ओह!

ठहरिए, नीचे मत जाइये. वहां आपकी जान को खतरा है.
ओह! यानि की धमकी दे रहे हो मुझे, कि ...

यदि मैं नीचे गया तो तुम मुझे मार डालोगे!
न-नहीं... यह बात नहीं. दरअसल षडयंत्र-कारी ने मुझे आपकी हत्या के आरोप में फांसने के लिए तहखाने में आपकी हत्या का इंतजाम किया हुआ है.

वाह...बहुत खूब!! अब नया पैंतरा बदल रहे हैं आप. मुझे यह समझाने की कोशिश कर रहे हो कि संसार की यह सबसे बड़ी डकैती आपने नहीं डाली... बल्कि आपको डकैती के जुर्म में फंसाने के लिए आपके...

...किसी दुश्मन ने इतनी बड़ी जोखिम उठाकर यह डकैती डाली है.
उफ! आप सब कुछ उलटा समझ रहे हैं. कैसे समझाऊं आपको कि...

मुझे कुछ भी समझाने की कोशिश मत करो और यह बात भी कान खोलकर सुन लो कि मैं पुलिस हैडक्वार्टर को सूचना देकर यहां आया हूं. इसलिए यदि मेरी हत्या यहां हुई तो तुम सीधे फांसी के फंदे पर पहुंचोगे.

पुलिस अफसर सीढ़ियों पर उतरने लगा.
उफ़ ! जादुई डण्डे... तुम ही कुछ करो.
आदेश दीजिए.

फौरन सबको अदृश्य जादुई सुरक्षा कवच के घेरे में ले लो... ताकि दुश्मन किसी को भी किसी भी प्रकार का कोई शारीरिक नुकसान न पहुंचा सके.
जो हुक्म!

अगले ही क्षण जादुई डण्डे में से एक अदृश्य किरण निकली और...
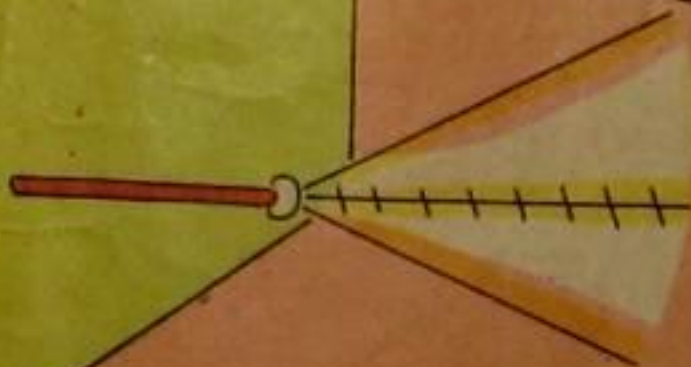
उस अदृश्य किरण ने सभी व्यक्तियों के इर्द-गिर्द एक अदृश्य घेरा बना दिया जो वास्तव में जादुई कवच था.

तहखाने में...
वह रहा, सोना, अ... रर... ओह!
ठ... ठ... ठ... ऽऽ...
सहसा ही मशीनगनें
गोलियां बरसाने
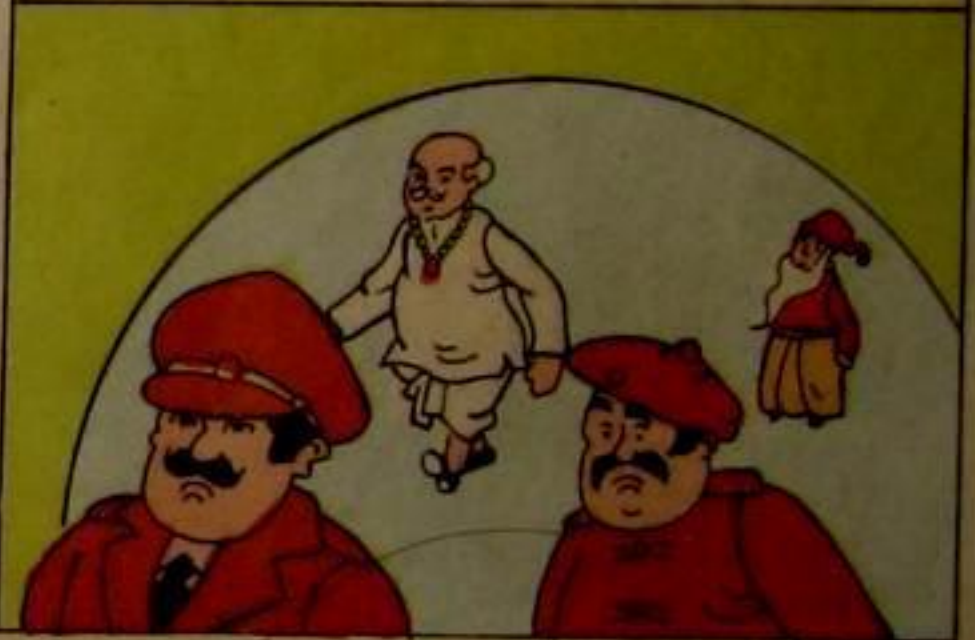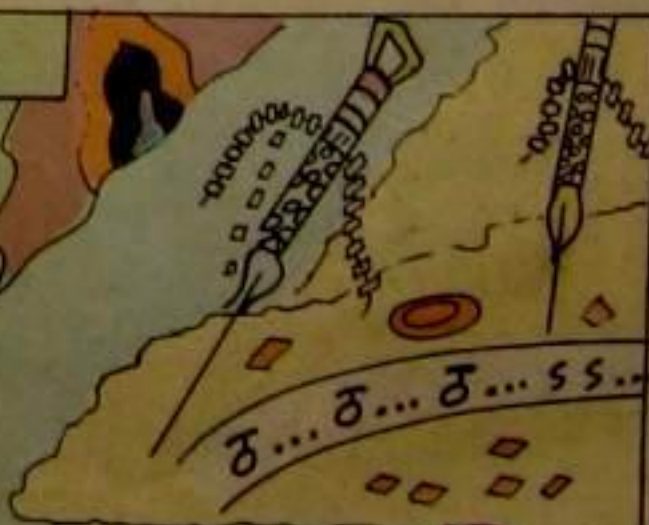
लेकिन मशीनगन की सारी गोलियां पुलिस अफसर तथा उसके सिपाही के जिस्म से कुछ दूर हवा में ही रुक गई.

य... यह क्या हो रहा है?
खुद देख लीजिए इंस्पेक्टर साहब ... मशीनगनें आपकी नज़र के सामने हैं कोई आदमी इन्हें आपरेट करता नहीं आ रहा. इसके बावजूद उसमें से गोलियाँ अपने आप बरस रही हैं.

लेकिन कैसे?
जादू से!

जादू! ओह, समझा तो अब आप अपना जादू इस्तेमाल कर रहे हैं... हवलदार गिरफ्तार कर लो इन्हें...?

ताऊ जी समझ गए कि उनके अज्ञात दुश्मन ने उन्हें बुरी तरह फंसा दिया है.
अब बचाव का सिर्फ एक ही रास्ता है कि...

... असली अपराधी को कानून के सम्मुख पेश कर दिया जाए. इसलिए...
जादुई डण्डे!
आदेश दीजिए!

और जादुई डण्डे को मानसिक विचार प्रणाली द्वारा आदेश दिया.
इस तहखाने की प्रत्येक वस्तु को स्थिर कर दो और मुझे तथा रमेश को वहाँ ले चलो, जहाँ जादुई धुन्ध के आवरण में हमारा अज्ञात दुश्मन छुपा बैठा है.

आदेश मिलते ही जादुई डण्डे ने तहखाने में प्रकाश छोड़ा और...
इन्स्पेक्टर और हवलदार जिस स्थान में थे, उसी स्थान में पत्थर की मूर्ति की भांति स्थिर हो जाए...
फिर अगले ही क्षण ताऊ जी और रूमझुम तहखाने में से गायब हो गए.
तथा क्षण भर पश्चात ही वह दोनों आकाश में उड़ते नजर आए.
कुछ ही देर बाद...
वह देखिए ताऊ जी... उस गुफा में !
सिर्फ धुन्ध ही धुन्ध है... उस गुफा में तो...

वही जादुई धुन्ध है जिसके पीछे कहीं आपका अज्ञात दुश्मन छुपा बैठा है. लेकिन यदि आपने ऐसे ही उस धुन्ध में घुसने का प्रयास किया तो उस धुन्ध का स्पर्श ही आपकी आंखों की रोशनी हमेशा के लिए समाप्त कर देगा.

फिर कैसे घुसना चाहिए उस धुन्ध में...?
एक विशेष तैयारी के साथ...!
जादुई डण्डे ने कहा और...

जादुई डण्डे में से नीली किरणें निकलकर ताऊ और रूमझुम पर पड़ने लगीं.
अब आपकी आंखें उस धुन्ध में बिल्कुल साफ-साफ देख सकेंगी साथ ही...

उस धुन्ध का घातक जादुई प्रभाव न तो आपकी आंखों पर होगा और न ही आपके जिस्म के किसी अंग पर...!
वाह!

ताऊ जी व रूमझुम उस गुफा के दहाने पर उतर गए.

जादुई डण्डे की बात सुनते ही जैसे ही ताऊ जी ने जादुई डण्डे को अजगर के जिस्म से स्पर्श किया.

और अगले ही क्षण दोनों को आगे का रास्ता बिलकुल साफ नजर आने लगा.

और अचानक ही...
जादुई गोले... मेरे इन दोनों दुश्मनों को भस्म...
लेकिन तभी...

ताऊ जी उस व्यक्ति की शक्ल देखते ही उसे फौरन पहचान गए. वह एक कुख्यात डकैत था जिसे लगभग चार वर्ष पहले ताऊ जी ने गिरफ्तार करवाया था.
तुम्हारा गोला तुम्हारे हाथ में नहीं बल्कि मेरे हाथ में है... डकैत संग्राम सिंह.
ताऊ जी ने अपनी नजरों का शक्तिशाली सम्मोहन किया.
न... नहीं... य... यह सम्मोहन है.

लेकिन तभी...
म... मैं इस सम्मोहन को अपने ऊपर से झटक सकता हूं.
रूमझुम ने अपनी करामाती दाढ़ी बढ़ानी शुरू कर दी.

और जैसे ही उसने ताऊ जी के सम्मोहन को अपने ऊपर से झटका...

रूमझुम की दादी ने एक करारा झटका दिया
आह... नहीं, दुष्ट बौने तूने मेरा जादुई गोला तोड़ दिया. सत्यानाश हो तेरा!
और गोला उसके हाथ से छूटकर गुफा के फर्श पर गिरकर टूट गया...

फिर सहसा ही संग्राम सिंह ने ताऊ जी पर छलांग लगा दी.

लेकिन ताऊ जी के शक्तिशाली घूंसों ने उसकी जबरदस्त धुनाई आरंभ कर दी.
ढिशूं
ढिशूं

शीघ्र ही...
आह... बस... बस... अब और मार नहीं सह सकता... मुझे माफ कर दो ताऊ जी.

अभी तो तुझे अपना अपराध कबूल करना है... रिजर्व बैंक में डकैती डालने का वह भयानक अपराध... जिसमें तूने मुझे फंसाया हुआ है.

और फिर वापस अपने बंगले की ओर...

जैसे ही वे तहखाने में प्रकट हुए... वह सब कुछ पुनः गतिशील हो गया जिसे जादुई डण्डे ने स्थिर कर दिया था.

म... मैं अपराधी हूं... अपने जादुई गोले को आदेश देकर यह तहखाना मैंने बनाया था... सोना भी यहां मैंने ही पहुंचाया था.

मैं संग्राम सिंह हूं. एक सजा याफ्ता खूंखार डकैत!

ओह... सच, पहचानता हूं... तुझे!

ताऊजी और कंटकटा राक्षस

अचानक ताऊ जी की नींद खुली...
अरे, यह आवाज किसकी ?

जादुई डण्डे बता किसकी आवाज सुन मेरी नींद खुली ?

जादुई डण्डे ने ताऊजी को चुप रहने के लिये कह कर पेड़ की ओर इशारा किया।

बहन सुना तुमने, आज हमारे महा-राज पर दुख का पहाड़ टूटने वाला है
मैं समझी नहीं बहन ?

ताऊ जी ध्यान से बातें सुनने लगे।
आज कटकटा राक्षस हमारे महाराज की एक लौती राजकुमारी का अपहरण कर ले जायेगा।

तब तो हमें फौरन महाराज को इसकी खबर देनी चाहिये।
भला हम पक्षियों की भाषा कौन समझेगा?

ये ठीक ही कह रही है मुझे ही कुछ करना चाहिये।

ताऊ जी ने अपने जादुई डण्डे को इशारा किया।
ऐ, जादुई डण्डे मुझे महाराज के पास ले चलो....।

और ताऊ जी डण्डे के साथ राजमहल की ओर उड़ चले...।

तभी एक पहाड़ी पर कटंकटा राक्षस प्रकट हुआ....
ही ही ही हो हो हो

घंटकटा राक्षस ने हाथ घुमा जादुई इशारा किया...

और एक भयंकर दैत्य हवा में पैदा हो गया।
कालदूत हाजिर है...

क्या हुक्म है मेरे आका?

कालदूत! मुझे चांडाल देवता के यज्ञ के लिये महाराज की एकलौती सोनपरी चाहिये। जाओ, उसे ले आओ!
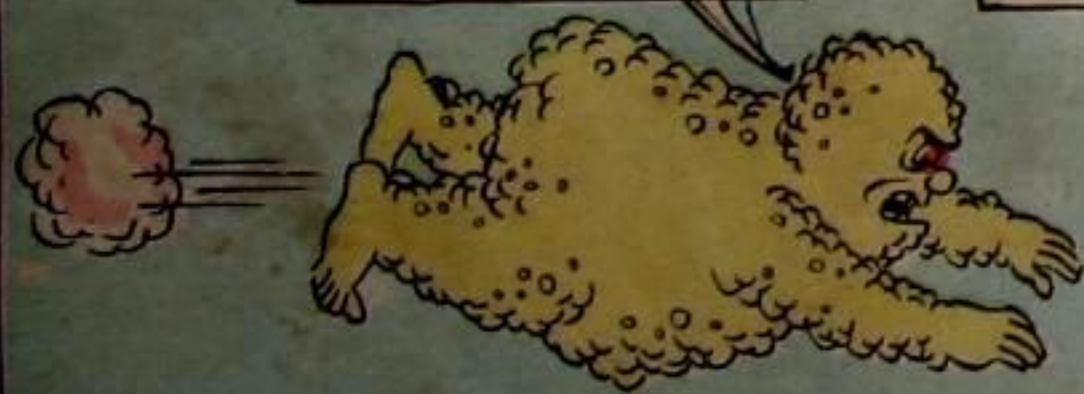
बस एक फूंक और.....
काल दूत क्षणभर में ही स्वर्ण महल जा पहुंचा...

राजकुमारी सोनपरी राजमहल के बाग में अपनी सहेलियों के साथ खेल रही थी।

आकाश में उड़ते हुए वालदूत ने एक फूंक मारी....

ओह! आंधी मुझे उड़ाये लिये जा रही है।
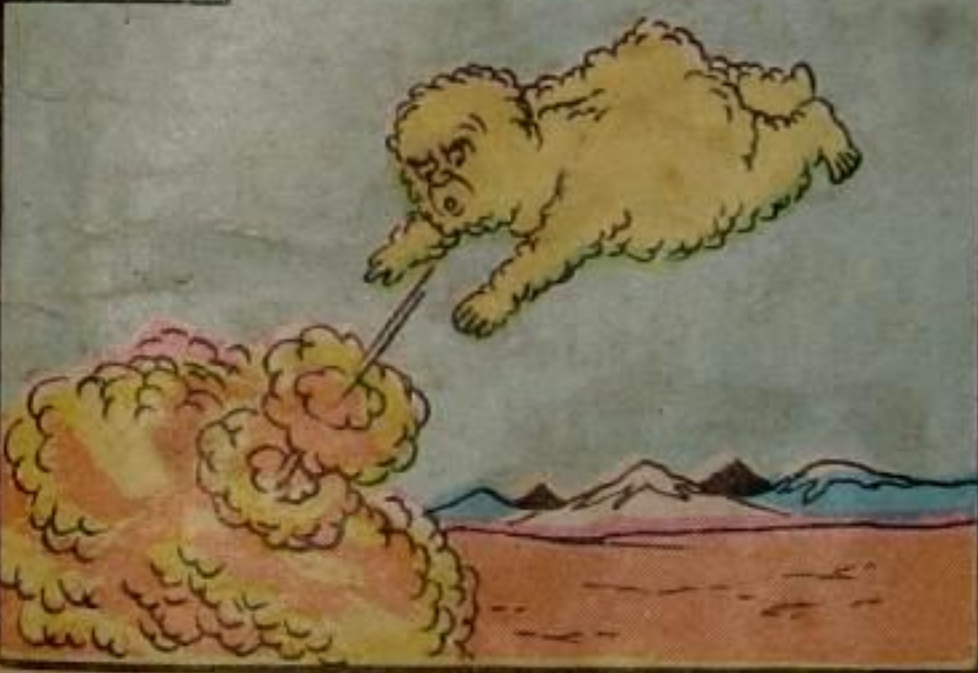
वालदूत की जादुई फूंक भंयकर आंधी बन राजकुमारी सोनपरी को उड़ा ले चली...

बचाओ! बचाओ!! राजकुमारी को आंधी उड़ाये ले जा रही है।

ताऊजी उड़ते हुए राजमहल पहुंचे....!

राजमहल के द्वार पर...
भाई राजकुमारी सोनपरी महल में ही है न?..वह गायब तो नहीं हुई?

क्या कह रहे हैं श्रीमान, भला राजकुमारी क्यों गायब होने लगी। फिर हमारे होते तो यह नामुमकिन ही है।

तभी....
अरे, सुना तुमने, राजकुमारी को आंधी उड़ा ले गई....!
क्या कहा? राजकुमारी को आंधी उड़ा ले गई यानी वह गायब हो गई? ताऊ जी भी यही कह रहे हैं।

ताऊजी तुरन्त राजा चन्द्रनासिंह के पास पहुंचे जिन्हें राजकुमारी के गायब होने का समाचार मिल चुका था।
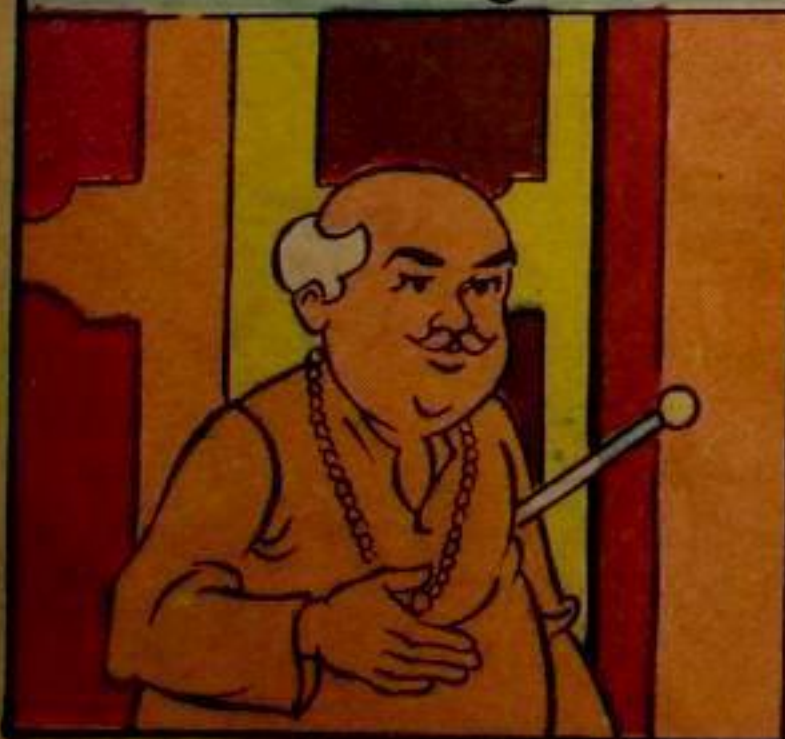
यह बड़े आश्चर्य की बात है कि राजकुमारी को आंधी ने नहीं उड़ाया बल्कि उसका अपहरण किया गया है, पर आपको कैसे पता?

महाराज, मैंने दो पक्षियों को आपस में बातें करते सुना था। इसीलिये यहां आया था पर....

हाय मेरी बेटी! पता नहीं अब वह किस हाल में होगी!

महाराज, आप धीरज रखें! राजकुमारी जहां भी होगी मैं उसे सकुशल वापस ले आऊंगा।

राजमहल के बाहर जाकर ताऊ जी ने जादुई डण्डे से पूछा...
जादुई डण्डे बता, राजकुमारी का पता हमें कहां चलेगा?

राजकुमारी का पता उसी पेड़ के पास मिलेगा जहां दो चिड़िया बैठी थीं।
जादुई डण्डे मुझे उसी पेड़ के पास ले चलो!

और ताऊ जी जंगल की ओर उड़ चले...

ताऊ जी पेड़ के पास पहुंच उसकी आड़ में छिपकर पक्षियों की बातें सुनने लगे.....।

बहन, तुम तो राजकुमारी के अपहरण की बात कह रहीं थी पर सुना है, राजकुमारी को आंधी उड़ा ले गई है।
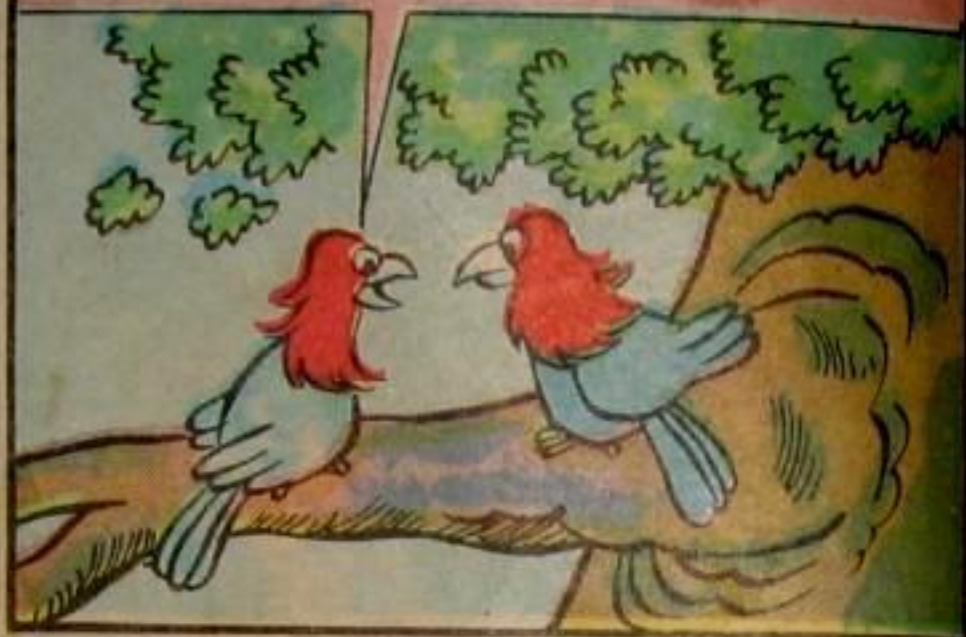
क्या पता, सुबह इतने जोरों की आंधी चल रही थी कि मैं कुछ देख ही नहीं पाई।
बहन, लाली ठीक ही कह रही है। उसको आंधी नहीं कंटकटा राक्षस उड़ा ले गया है।

ताऊ जी राजकुमारी के अपहरणकर्ता का नाम जान चुके थे। वे पेड़ की आड़ से निकले.....
हो... हो..

उल्लू राजा, तुम्हें तो रात में ही दिखाई देता है फिर तुमने मुझे कैसे देखा?

तुम्हारी जल्दीबाज़ी और झाड़ियों की खड़खड़ाहट से मैंने तुम्हें पहचाना है। यह बताओ तुम्हें इतनी जल्दी क्यों है ?

दोस्त, मैंने महाराज की राजकुमारी को सकुशल वापस ले आने का वचन दिया है।

बहुत भोले हो! भला इस डण्डे की सहायता से क्या तुम खतरनाक कंटकटा राक्षस का मुकाबला कर सकोगे ?

यह मामूली डण्डा नहीं ! यह मेरा हमदम और अच्छा दोस्त है।

ठीक है, जाओ ! पर बिना सर्पमणी के तुम कंटकटा तक कैसे पहुंचोगे ?

इतना कह उल्लू राजा गायब हो गया...
पहले मुझे सर्पमणी खोजनी चाहिए।

ताऊ जी चलते-चलते एक सरोवर के पास पहुचे
कौनहै? रूको!
आवाज़ तो इसी दिशा से आ रही है पर कोई नजर नहीं आता!
अचानक सरोवर से एक दैत्य निकला...
कौन हो तुम? कहां जा रहे हो?
जानते हो बिना मुझे हराये यहां से कोई नहीं गुजर सकता।
जानता हूं सर्पराज वार करो।
सर्पराज ताऊ जी की ओर आग उगलता हुआ लपका...
लो! सम्भालो वार

ताऊजी ने जादुई डण्डा उछाल दिया...
सम्भालो वार!

जादुई डण्डे ने तलवार बन सर्पराज की गर्दन काट दी...।
ओह

तभी।
कौन हो तुम?

मैं परीलोक की राजकुमारी हूं मुझे सर्प-राज ने कैद कर रखा था। आज आपने से मारकर मुझे आजाद किया है।

आपका बहुत धन्यवाद! लीजिये यह रही मेरी छोटी सी भेंट.
ओह! सर्पमणी!

ताऊजी कंटकटा राक्षस की खोज में आगे चल पड़े..

उधर...
धूमकेतु की मायावी आंधी राजकुमारी को इधर ही ला रही है।

कंटकाय राक्षस ने सोनपरी को पकड़ लिया...

... और उसे ले अपनी काली गुफा की ओर उड़ चला...

अब तुम्हें कोई नहीं बचा सकता सोनपरी चांडाल देवता तुम्हारी बलि पाकर खुश हो जायेंगे!

नहीं, नहीं! मुझे छोड़ दो मेरे पिताजी तुम्हें ढेरों हीरे-जवाहरात देगें।

मुझे हीरे जवाहरात नहीं, स्वर्गलोक चाहिये, समझी।

कंटकटा राक्षस ने मंत्र पढ़ एक चट्टान से गुफा का द्वार बन्द कर दिया।

चलकर देखूं, राजकुमारी के अपहरण के बाद मेरे विरुद्ध कौन सा षड्यंत्र रचा जा रहा है!

गुफा में आ कंटकटा ने जादुई गोले को जगाया.....

गोले में ताऊजी आते हुये नज़र आये:-

ऐ तिलस्मी जिन्न,
जाग... जाग
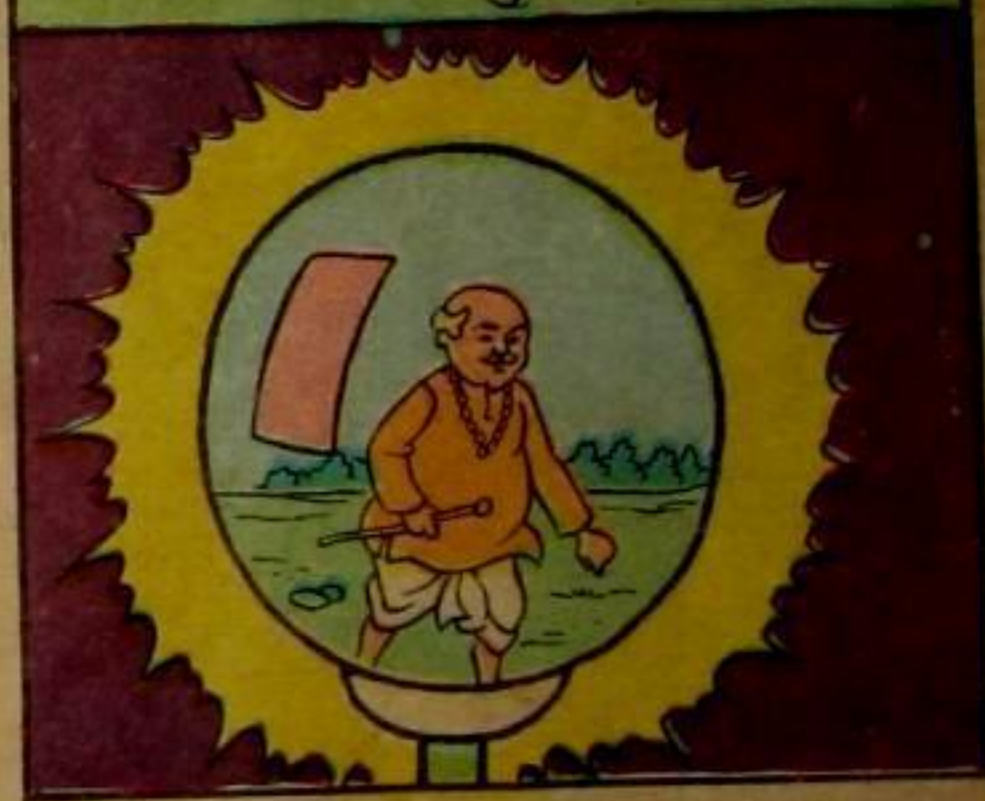
जादुई गोले से एक जिन्न प्रकट होने लगा।

आका, यह बूढ़ा ताऊजी है। वह आपकी कैद से राजकुमारी को छुड़ाने इधर ही आ रहा है।

मैं इसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा कच्चा चबा जाऊंगा।

राक्षस ने मंत्र पढ़ हवा में एक हड्डी उछाल दी...
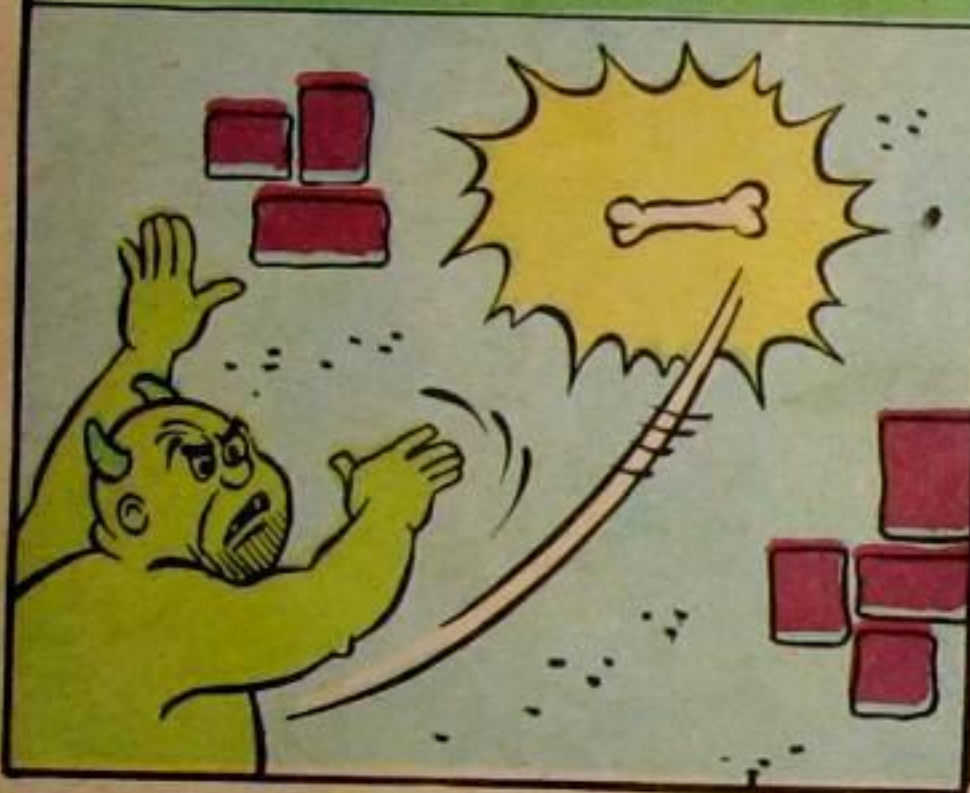
उधर ताऊजी गुफा की तलाश में भटक रहे थे।

अचानक ही...
अजीब बात है, थोड़ी देर पहले तो यहां कोई गुफा नहीं थी॥

चलकर देखूं शायद कटकटा यहीं रहता हो?

उधर राक्षस ने ताऊ जी को गोले में देखा....।
फंस गया चूहा! अब मैं इसे कच्चा खाऊंगा।

वह जादुई इशारे करने लगा....
बन्द हो जा..बन्द हो जा

अरे, गुफा का द्वार कैसे बन्द हो गया?

ओह! तो यह कंटकटा की जादुई चाल थी यहां से कैसे निकलूं....दम घुट रहा है!

ताऊ जी ने मंत्र पढ़ा और....
जादुई डण्डे मुझे बाहर निकालो!

जादुई डण्डे से प्रकाश की तेज किरणें निकली...

पलक झपकते ही गुफा में चूहों की फौज़ भरने लगी और.....

मिनटों में ही उन्होंने गुफा में सुरंग खोद डाली।

इस कैद से तो बच निकला आगे मुझे सावधान रहना चाहिए कैंटकटा को मेरे आने का पता चल चुका है।

उधर कंटकटा ने जादुई गोले में देखा तो....
ओह! बच निकला पर वह नहीं जानता, मुझसे बचना आसान नहीं।

राक्षस ने गुस्से में आकर मंत्र पढ़ा और जोर से फूंक मारी..
फू ऽऽ

ताऊ जी गुफा की कैद से निकले ही थे कि उन्हें भयंकर आंधी ने घेर लिया।

ओह! यह आंधी मुझे उड़ाये लिये जा रही है!

ताऊ जी ने सर्पमणि मुंह में रख ली.

गायब हो गया! मेरी मायावी आंधी ने ताऊ को पाताल लोक पहुंचा दिया हा-हा.

नरकंकाल अपनी सफलता पर खुश होकर पलटा ही था कि अदृश्य ताऊ जी ने उसकी पीठ थप-थपाई।
कौन है!? हिम्मत है तो सामने आकर मुकाबला करो!

ताऊ जी प्रकट हुए....
ओह! तो तुम अब तक जिन्दा हो?

इस बार तुझे पाताल लोक पहुंचा कर ही रहूंगा- वार सम्भालो!

कंकाल का भाला आग उगलता हुआ ताऊ जी की ओर लपका..

ताऊ जी ने अपना जादुई डण्डा हवा में उछाल दिया।
खटाक!

यह क्या, भाले के नष्ट होने से तो मेरी जादुई शक्ति भी नष्ट हो गई।... भागूं...

ठीक कहा तुमने। बुरी शक्तियों के साथ बुरे आदमी को भी नष्ट हो जाना चाहिए।
ओह!

जादुई मेले में यह सब देख कंटकटा राक्षस गुस्से से कांपने लगा...
गुर्र ऽऽऽ

उधर ताऊ जी कंटकटा की खोज में आगे ही बढ़े चले जा रहे थे।

बहुत थक गया थोड़ा आराम कर लूं।

ताऊ जी आराम करने लगे और जादुई डण्डा उनकी पहरेदारी करने लगा।

अचानक ही पेड़ की दो शाखायें सोये हुये ताऊ जी की ओर बढ़ीं....

और उन बाहों ने ताऊ जी को जकड़ लिया...
ओह! नरभक्षी पेड़ इससे बचना होगा।

पेड़ के खतरनाक पंजे ताऊ जी का गला दबाने लगे तभी ताऊ जी ने जादुई डण्डे को याद किया....।
मदद जादुई डण्डे!!

हुक्म पाते ही जादुई डण्डा हवा में तन कर खड़ा हो गया।

मैं सूर्यनगर का राजा हूं मुझे कंटकटा राक्षस ने अपनी जादुई शक्तियों से नरभक्षी पेड़ बना दिया था।

उस काली पहाड़ी पर एक अंधी गुफा है। कंटकटा राक्षस वहीं रहता है।

धन्यवाद दोस्त! मुझे भी उससे एक हिसाब चुकाना है।

ताऊ जी जादुई डण्डे के साथ काली पहाड़ी की ओर उड़ चले....
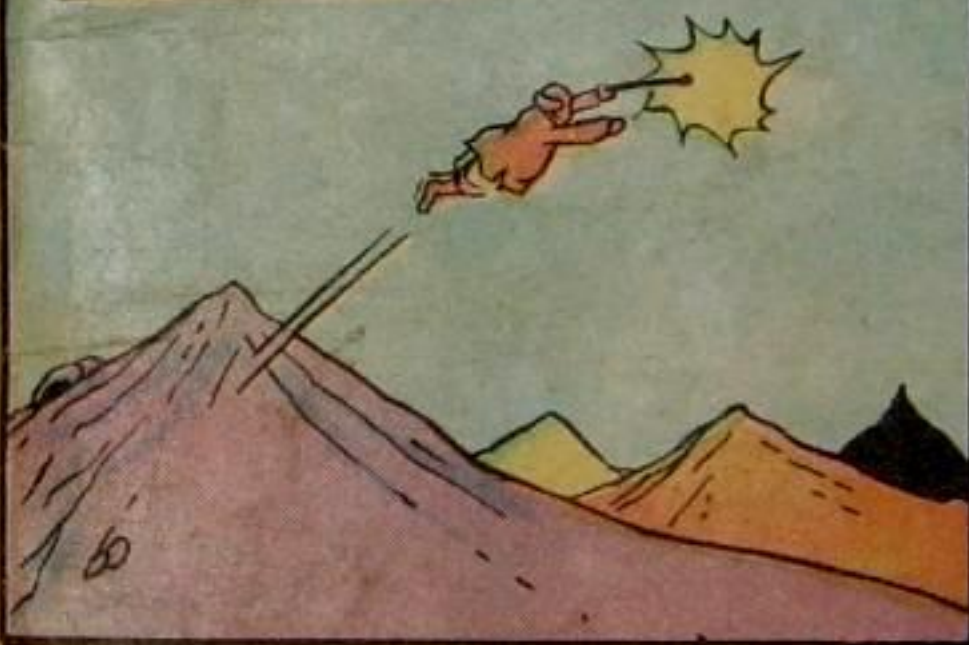
उधर अंधी गुफा में कैद राजकुमारी को किसी के चलने की आहट सुनाई दी..
कौन है? सामने आओ।

चट्टान की ओट से एक नन्हा बौना निकला।
मैं हूं रूमझुम बौना।

कंटकटा राक्षस ने मेरी प्रजा को कैद कर रखा है और रोज एक-एक को खाकर अपनी भूख मिटाता है। अब मैं अकेला बचा हूं। क्या तुम मेरी मदद करोगी?

मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती रूमझुम। गुफा का द्वार एक भारी चट्टान से बंद है।

छत के उस छेद को देखो! मुझे किसी तरह वहां तक पहुंचा दो। मैं बाहर निकल तुम्हारे लिए सहायता का इतंजाम करवा दूंगा।

इधर जब ताऊजी काली पहाड़ी पर पहुंचे तो उन्हें एक छेद से बौना निकलता दिखाई दिया।
अरे, यह क्या?

रुको, कौन हो तुम? यहां क्या कर रहे हो?

मैं रूमझुम बौना हूं। मैं कंटकटा की कैद में बन्द सोनपरी के लिए मदद लेने जा रहा हूं।

अरे, तो राजकुमारी यहां बन्द है। मैं तुम्हारी मदद करूंगा,
हम आपके एहसान मंद रहेंगे आइये मेरे साथ।

रुमझुम ताऊ जी को गुफा के द्वार पर ले जाता है।
ओह! गुफा जादुई शक्ति से बन्द है।

उधर कंटकटा की गुफा में रखी जादुई खोपड़ी...
हा हा हा हा हा

वह उड़ती हुई सोये कंटकटा के पास पहुंची।
कट
कट
कट

कालिया मसान, बोल तूने मुझे सोते से क्यों जगाया।
तू सो रहा है, कंटकटा और उधर तेरी मौत तुझे ढूंढ़ रही है।

राक्षस जादुई गोले में देखता है....।
वही बूढ़ा है पर यह गुफा के पास क्या कर रहा है?

वह जादुई शक्ति गायब हो जाता है।

उधर गुफा पर...
ताऊ जी अब क्या करें? बिना चट्टान हटाये राजकुमारी आजाद कैसे होगी?

अचानक...
कड़ड़

.... पहाड़ी पर कटंकटा राक्षस प्रकट हुआ।
ताऊ जी भागो! कंटकटा आ रहा है।

इन्सान की गन्ध! वह बूढ़ा यहीं आस-पास है।

अब क्या करें, वह हमें खा जायेगा!
डरो नहीं रूमझुम कोई उपाय सोचो!

तभी आदम गन्ध का पीछा करता कंटकटा राक्षस वहां आ पहुंचा।
वह रहा!

और उसने ताऊ जी को अपने हाथों में दबोच लिया।
बचाओ

राक्षस द्वारा ताऊ जी को खाया जाता देख रूमझुम जान बचाकर भागा....।
अब वह मुझे खायेगा, जान बचाऊं!

तभी हवा में ताऊ जी प्रकट हुये.....

ताऊ जी आप? वह कौन था जिसे राक्षस ने खाया था।

वह जादुई डण्डे की शक्ति से राक्षस को भुलावा देने के लिए मेरा ही हम शक्ल था, वह सोचता है उसने मुझे खा लिया है।

आओ, हम इन फूलों का रस अपने शरीर पर मल लेते हैं, इससे राक्षस हमारी गन्ध नहीं पा सकेगा।

दोनों छिपकर कंटकटा को देखने लगे।
वह अंधी गुफा की ओर जा रहा है। शायद राजकुमारी को खाने!

कंटकटा ने मंत्र पढ़कर द्वार की ओर जादुई इशारा किया...
खुल जा, खुल जा!

गुफा के द्वार की चट्टान हवा में

तभी...
बचाओ बचाओ
ओह!

रूमझुम आओ! दैत्य कहीं राजकुमारी को नुकसान न पहुंचाये।

इसके पहले कि दोनों गुफा तक पहुंचते...
बचाओ
वह राजकुमारी को कहीं और लिये जा रहा है ताऊ जी कुछ करिये न?

ऐ, जादुई डण्डे! दिखा अपना कमाल
हमें कंटकटा दैत्य के पीछे-पीछे ले चलो।

इसी गुफा में राजकुमारी कैद है पर भीतर कैसे जायें?
इस छोटे से सुराख से भीतर जाया जा सकता है।

ताऊ जी ने रूमझुम को जादू से तोता बना दिया और तोता बना बौना....

छोटे से सुराख से ही गुफा में जा घुसा....
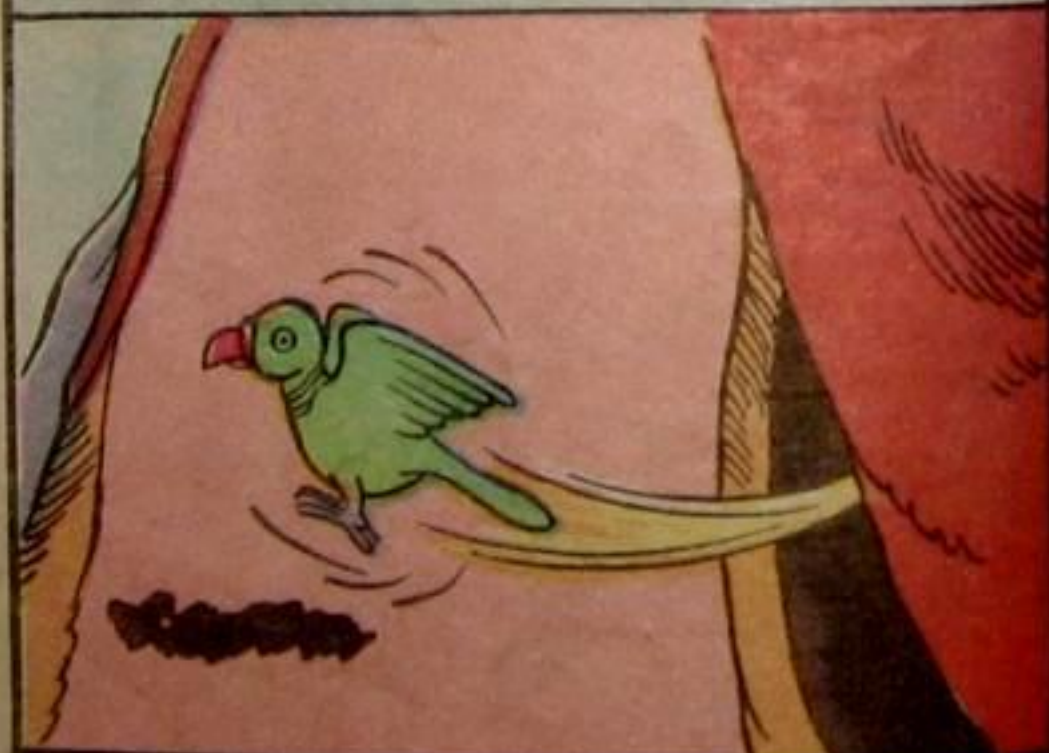
राजकुमारी जी। अब आप चिन्ता न करें मैं मदद ले आया हूं।
कैसी मदद? कौन हो तुम? मैं तुम्हें नहीं जानती।

मैं रूमझुम बौना हूं और जादू से तोता बना हूं। तुम हिम्मत मत हारो ताऊ जी जल्दी ही किसी तरकीब से छुड़ा लेंगे।

मेरा बचना मुश्किल है रूमझुम। कल कंटकटा मुझे चांडाल देवता की बलि चढ़ा देगा

निराश न होवो! ताऊ जी बलशाली और परोपकारी हैं। वे तुम्हें जरूर छुड़ा लेंगे।
और रूमझुम उड़ गया...

रूमझुम ने ताऊ जी को सारी बात बताई....
चिंता मत करो! राजकुमारी को छुड़ाने की कोई राह निकल ही आयेगी।

उस रात जब कंटकटा सोने जा रहा था तब...
क्या बात है कलियमसान? तू यहां कैसे?
तेरी मौत सिर पर खड़ी है। और तुझे जरा भी चिन्ता नहीं कंटकटा?

मैं उस ताऊ के बच्चे को तो कच्चा चबा चुका हूं फिर मौत का डर कैसा?

कल चांडाल देवता की बली चढ़ाने के बाद मैं हमेशा के लिए मौत के डर से मुक्त हो जाऊंगा।
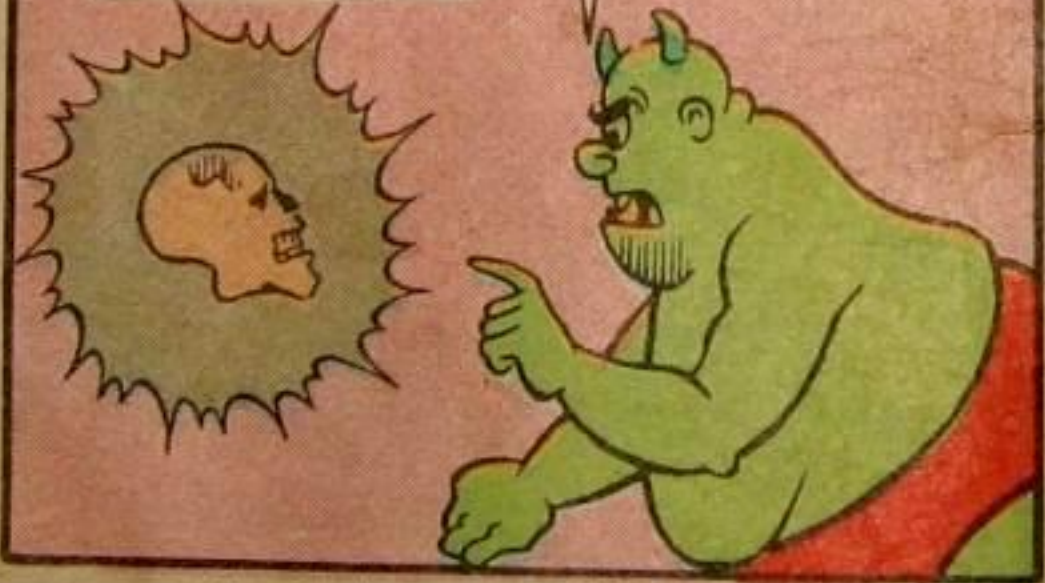
दूसरी सुबह....
वह देखिये, वह राजकुमारी को बली चढाने के लिये लेने आ रहा है।

बलि पाकर चांडाल देवता खुश हो मुझे अमर बना देंगे।

अरे! कहां गायब हो गई राजकुमारी?

मैं यहां हूं।

उस बार बच गई पर इस बार नहीं बच सकती।

मैं यहां हूं!

मैं यहां हूं!
मैं यहां हूं!
मैं यहां हूं!

कंटकटा मंत्र पढ़कर कालिया मासान को बुलाता है।

बोल कालिया मसान! बोल तेरे रहते राजकुमारी गुफा की कैद से बाहर कैसे आई?

आका, आपको धोखा हुआ है। राजकुमारी गुफा में ही है, गुफा का द्वार खोलकर तो देखिये।

कंटकटा गुफा में जाकर देखता है।
ओह! मुझे सचमुच धोखा हुआ अब देर करना ठीक नहीं।

बचाओ बचाओ
ओह! राजकुमारी की आवाज!

ताऊ जी देखिये, कंटकटा दैत्य राजकुमारी को जबरन बलि देने के लिए ले जा रहा है।

ताऊजी जादुई मंत्र पढ़ हाथ के इशारे करते हैं।

.... और पलक झपकते ही ताऊजी रुमझुम के साथ अदृश्य हो कंटकटा का पीछा करने लगे.....

कंटकटा राक्षस ने सोनपरी के साथ समुद्र में छलांग लगा दी...

कंटकटा के पीछे ताऊ जी भी छलांग लगाते हैं।

मैं भी साथ आया ताऊ जी
ज़रा रुकना!

ताऊजी, लगता है चांडाल देवता का मन्दिर पाताल लोक में है।

हूं! लगता तो ऐसा ही है रूमझुम!

तभी एक भयंकर अष्टपाद ने रूमझुम को अकेले तैरते देखा....

.... और उसने अपना एक हाथ बढ़ा तैरते रूमझुम को पकड़ लिया....

ओह! अष्टपाद!
बचाओ!

ताऊ जी ने अपने जादुई डण्डे को इशारा किया...
जाओ SS

अष्टपाद ने जादुई डण्डे को अपनी ओर आते देख
झुमझुम को छोड़ अपनी दूसरी बांहु उसे पकड़ने
के लिए बढ़ाई...

जादुई डण्डे से बिजली की किरणें निकली
और अष्टपाद मर गया...।
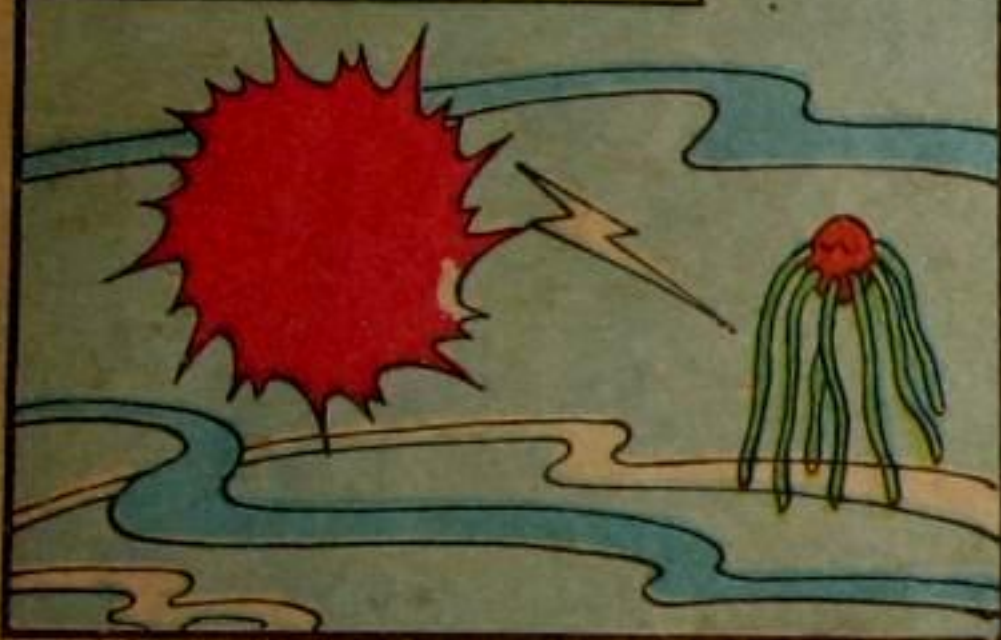
ताऊ जी और झुमझुम समुद्र की गहराई में
उतर जाते हैं।

अन्त में...
ताऊ जी, लगता है। वही पाताल लोक
का चांडाल मन्दिर है।

सिपाही, याद रहे। चांडाल देवता की पूजा खत्म होने तक मन्दिर में कोई घुसने न पाये।
जो आज्ञा!

अब क्या करें चारों ओर सख्त पहरा है।

ताऊ जी जादुई शक्ति से मंत्र पढ़ बिजली की तेजी से मन्दिर में घुस जाते हैं।

ताऊ जी, हम कहां जा रहे हैं?

ताऊ जी, वह देखिये! कंटकटा राजकुमारी को जबरन उठाये इधर ही आ रहा है।

ताऊ जी और रूमझूम चांडाल देवता की चट्टान के पीछे छिप जाते हैं।

राक्षस राजकुमारी को लेकर चांडाल देवता की मूर्ति के पास आता है।
बचाओ!

नहीं नहीं! मुझे छोड़ दो
तैयार हो जाओ राजकुमारी! तुम्हारी बलि पाकर मेरे देवता मुझ पर बहुत खुश होंगे।

राजकुमारी, मैं स्वर्ग लोक जीतना चाहता हूं मैं तुम्हें छोड़ नही सकता!

क्या मेरी हत्या कर तुम स्वर्गलोक जीत सकोगे?

हां। चांडाल देवता को तुम्हारी बलि देकर मैं अमर हो जाऊंगा फिर मुझे देवता भी नहीं मार सकेगें।

ताऊ जी, आप खामोश क्यों हैं? कुछ करिये न वर्ना राक्षस राजकुमारी की हत्या कर देगा।

मुझे भी राजकुमारी के प्राणों की चिंता है रूमझुम! बस उचित समय का इन्तजार है।

कंटकटा गंडासा लेकर लपकता है।

बचाओ
समय आ गया यही समय है।

ताऊजी चट्टान पर चढ़ खोपड़ी में घुस जाते हैं और....
रूको कंटकटा रूको!
कौन है?

मैं चांडाल देवता हूं।

मेरा अहो भाग्य, जो आपके दर्शन हुये। आपकी पूजा के लिए बलि तैयार है।

कँटकटा, तुम मुझे बलि चढ़ाकर क्या चाहते हो?

आपको खुश करना चांडाल देवता।

इसीलिये तो मैंने इस नन्हीं राजकुमारी का अपहरण किया ताकि मैं इसे बलि चढ़ा सकूं

राजकुमारी बड़ी प्यारी और भोली है। मुझे बलि मंजूर है पर...

पर क्या चांडाल देवता आज्ञा कीजिये?
कँटकटा, स्वर्ग लोक पर विजय पाने का सपना असंभव है।

जानते हो! स्वर्गलोक के बलशाली और पराक्रमी देवताओं से लड़ाई में तुम मारे भी जा सकते हो।

चांडाल देवता, इसीलिये तो मैं आपसे अमरता का वरदान चाहता हूं।

कंटकटा, अमरता पाने के लिए तुम्हें परीक्षा देनी होगी। क्या तुम्हें मंजूर है?

मैं हर परीक्षा के लिये तैयार हूं। आप आज्ञा दीजिये।

क्या तुम अमर होने के लिये आग की लपटों में कूदने के लिये तैयार हो?

आग में कूदना कौन सा मुश्किल है। अमर होने के लिये सौदा महंगा नहीं।

मुझे मंजूर है।

चांडाल देवता की विशाल खोपड़ी में छिपे ताऊ जी ने जादुई डण्डे को इशारा किया.....
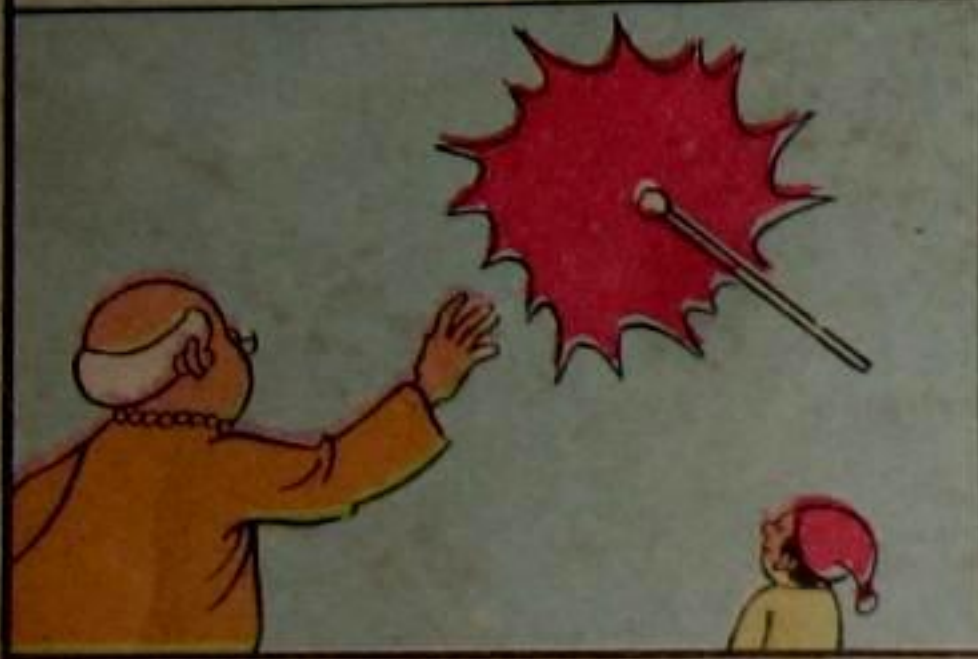
और चांडाल देवता की आंख से आग की लपटें निकलने लगीं...।

कंटकटा दैत्य के सामने आग की लपटें उठने लगी...
अग्नि परीक्षा में पास होते ही स्वर्गलोक तुम्हारे कदमों में होगा कंटकटा।

कंटकटा दैत्य के आग में कूदते ही...
आह मरा!

कंटकटा दैत्य के मरते ही चांडाल देवता की पहाड़ी कांपने लगी।

ताऊ जी यह क्या हो रहा है? खोपड़ी हिल क्यों रही है!

आओ, रूमझुम भैया अब सब खुशी-खुशी अपने घर चलें।
मेरा घर ही कहा रहा दीदी !? कँटकटा राक्षस ने तो मेरी प्रजा को खा लिया और राज्य नष्ट कर दिया।
चिन्ता न करो रूमझुम आज से तुम मेरे साथ चन्दनगढ़ के राजमहल मे रहोगे।
ताऊ जी ने जादुई डंण्डे को इशारा किया और वह जादुई कालीन सब को ले चन्दनगढ़ की ओर उड़ चला...।